इकाई 8 जयशंकर प्रसाद और उनकी कविता

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 जयशंकर प्रसादः जीवन और व्यक्तित्व

8.3 युग परिवेश

8.4 रचनाएँ और रचना संसार

8.5 प्रसाद काव्यः प्रमुख स्वर

8.5.1 इतिहास एवं संस्कृति

8.5.2 राष्ट्रीय चेतना और मानवीयता

8.5.3 प्रेम-व्यंजना

8.5.4 सौन्दर्य चेतना

- प्रकृति सौंदर्य
- नारी भावना का सौंदर्य
- गीति सौंदर्य

8.5.5 रहस्य एवं दर्शन

8.6 प्रसाद काव्यः शिल्प-विधान

8.6.1 भाषा-सौंदर्य

8.6.2 शैलीगत नवीनता

8.6.3 प्रतीक विधान

8.6.4 बिम्ब विधान

8.6.5 अलंकार तथा छंद

8.7 मूल्यांकन (प्रसाद का प्रदेय)

8.8 सारांश

8.9 शब्दावली

8.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

आधुनिक काल के हिंदी साहित्य को अपनी अनुपम, अलौकिक एवं जन्मजात प्रतिभा से सम्पन्न, समृद्ध तथा जीवंत बनाने वाले छायावाद के प्रवर्तक एवं सर्वोपरि स्थान के अधिकारी जयशंकर प्रसाद पर लिखी गई इस इकाई के अध्ययन से आपः

- प्रसाद जी के जीवन, व्यक्तित्व एवं उसके निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने वाले युग-परिवेश को समझ सकेंगे;

- महाकवि प्रसाद के काव्य-संसार से अलग उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध एवं समालोचना आदि साहित्य-क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- प्रसाद के काव्य में मिलने वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय-चेतना तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करने वाली अलौकिक प्रतिभा से परिचित हो सकेंगे;
- कवि की प्रेम-व्यंजना तथा प्रकृति, नारी एवं गीति-सौन्दर्य का आस्वाद ग्रहण कर सकेंगे;
- भारतीय दर्शन, रहस्यवाद तथा मनोविज्ञान के समन्वय का निरूपण करने वाली कवि-मनीषा को जान सकेंगे;
- प्रसाद जी के शिल्प विधान की जानकारी प्राप्त करते हुए भाषा-सौन्दर्य, शैलीगत, अपूर्वता, सटीक प्रतीक-विधान तथा अलंकार एवं छंद आदि विधानों की महत्वपूर्ण भूमिका का अनुभव कर सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में एक विद्रोह के रूप में उभर कर सम्मुख आने वाले युग को ''छायावाद'' की संज्ञा दी गई और छायावाद की इस अनुपम, अपूर्व एवं अद्‌भुत साहित्य धारा के प्रवर्तन का श्रेय मिला सरस्वती के विशिष्ट पुत्र महाकवि जयशंकर प्रसाद को। अतीत के झरोखों से वर्तमान की स्थितियों एवं समस्याओं को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक डोर में पिरोकर स्वच्छ रूप से प्रतिष्ठित करने वाले प्रसाद निश्चित ही अलौकिक प्रतिभा के धनी व्यक्ति एवं साहित्यकार थे। काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी एवं निबन्ध आदि में एक साथ छायावाद की समस्त विभूति को स्वर देकर इस महाकवि ने साहित्याकाश में एक अन्यतम-ध्वज फहराया और इसी से कवि प्रसाद की साहित्य विद्या के हर क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान भी बनी। भारतीय परम्परा एवं संस्कृति-प्रेमी इस साहित्य सृष्टा ने परंपरा का अनुसरण न करते हुए भी उसमें अमूल्य योगदान दिया। उपनिषद्-दर्शन ने उन्हें प्रभावित किया तो भारत की प्रगतिशील सामाजिक परिस्थितियों ने भी उन्हें झकझोरा। राष्ट्रीय चेतना एवं मानवतावादी दृष्टि को प्रचार-प्रसार का दायित्व उन्होंने संभाला तो नारी के प्रति पूर्णतः नवीन एवं श्रद्धा-युक्त दृष्टि को भी जन्म दिया। सार्वभौमिक दृष्टिकोण के समर्थक इस प्रकृति-प्रेमी गीतकार के काव्य का भाव पक्ष जितना प्रबल है उतना ही शक्तिशाली उनका शिल्पविधान भी। प्राणवान-भाषा, शैली की नवीनता तथा प्रतीक, अलंकार एवं छंद आदि अन्य उपादानों के प्रयोग में दिखाई देने वाली कवि की कलात्मक-प्रतिभा इसी तथ्य का प्रमाण बनती है कि उनकी-सी क्षमता और शक्ति का कोई दूसरा कलाकार हिंदी-साहित्य के इस पूरे युग में नही दिखाई पड़ता। युग-कवि 'प्रसाद' छायावाद को नेतृत्व देकर सफलता के चरम-शिखर तक ले जाने वाले वे महान कलाकार हैं, जो साहित्य-आकाश में सदैव ध्रुव की तरह प्रकाशित होकर आलोक फैलाते रहेंगे। भारतेन्दु युग में जन्मी नवजागरण एवं राष्ट्रीय चेतना की जो लहर द्विवेदी युग तक आते-आते जोर पकड़ने लगी थी, प्रसाद-युग या छायावाद तक आकर वही पूर्णतः पल्लवित और पोषित हो चुकी थी। भारतीय जीवन की ऐसी ही अनेक दीर्घ परंपराओं का सफल निरूपण बहुमुखी प्रतिभा के इस धनी साहित्यकार प्रसाद के पद्य एवं गद्य साहित्य में सहज ही देखने को मिलता है। साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांति की लहर और परिवर्तन की चेतना फैलाने वाले इस प्रवर्तक कलाकार के काव्य का विस्तृत अध्ययन हम इस इकाई में करने जा रहे हैं। इस इकाई के बाद हम छायावाद के अन्य तीनों कवियों निराला, पन्त एवं महादेवी के काव्य पर लिखी गई इकाइयों का अध्ययन करेंगे।

8.2 जयशंकर प्रसादः जीवन और व्यक्तित्व

महाकवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी में माघ-शुक्ल दशमी, संवत 1846 अर्थात सन् 1889 ई. को हुआ था। इनके पूर्वज ''सुंघनी साहू'' के नाम से विख्यात शिव के अनन्य भक्त थे। शिवरत्न साहु उनके पितामह थे और वे अत्यंत दयालु तथा दानी व्यक्ति थे। तम्बाकू और सुरती के इस प्रख्यात व्यापारी-परिवार में अत्यंत व्यवहार कुशल तथा उदार हृदय व्यक्ति थे श्री देवी प्रसाद, ये ही प्रसाद जी के पिता थे। उनके घर में कवियों, गवैयों, पंडितों, वैद्यों, यांत्रिकों, भाट तथा बाजीगरों एवं ज्योतिषी तथा विद्वानों का आना-जाना लगा रहता था। इनकी माता का नाम श्रीमती मुन्नी देवी था और अपने भाई-बहनों में सबसे छोटे होने के कारण माता का इनके प्रति विशेष प्रेम था। प्रसाद जी के ज्येष्ठ भाई का नाम शुम्भुरत्न था। कट्टर शैवमतावलम्बी इस परिवार में प्रसाद जी से पहले उनके कई भाई-बहनों की मृत्यु हो चुकी थी। इसीलिए प्रसाद जी की दीर्घायु के लिए गोकर्णनाथ महादेव की मनौती मानी गई थी। यही कारण है कि इनका नाम भी भगवान शंकर के प्रसाद स्वरूप ''जय शंकर प्रसाद'' रखा गया।

प्रसाद जी की आरम्भिक शिक्षा घर पर ही शुरू हुई। इसके बाद वे स्थानीय क्वीन्स-कॉलेज में सातवें दर्जे तक पढ़े। कश्मीरी प्रत्यभिज्ञा-दर्शन की विचारधारा से समृद्ध इस परिवार के धार्मिक एवं दार्शनिक वातावरण का प्रभाव तो प्रसाद जी के चिन्तन पर पड़ा ही साथ ही सहृदयता, उदारता, धर्मनिष्ठता एवं साहित्य-सृजन-क्षमता के गुण भी उन्हें उत्तराधिकार में प्राप्त हुए। इसी परिवेश में विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से परिचय होने के फलस्वरूप ही उनके काव्य एवं अन्य साहित्य में विभिन्न मानव-स्वभावों का सफल एवं पूर्ण चित्रण भी मिलता है। सातवीं कक्षा में पढ़ते समय ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। परिणामतः बारह वर्ष की अवस्था में ही स्कूल की शिक्षा से वंचित होना पड़ा। परिवार का सार भार अग्रज श्री शम्भुरत्न जी ने संभाला। प्रसाद जी की शिक्षा का प्रबन्ध घर पर ही किया गया और उन्होंने हिंदी, उर्दू, फारसी तथा संस्कृत का गहन अध्ययन किया। वेद और उपनिषद्‌ों का उन्हें विशिष्ट ज्ञान था। पन्द्रह वर्ष की अवस्था हुई तो माता का देहान्त हो गया। दुर्भाग्य ने यहीं साथ न छोड़ा। दो वर्ष बाद अग्रज भाई शम्भुरत्न जी का भी स्वर्गवास हो गया और घर का पूरा दारोमदार प्रसाद जी पर आन पड़ा। छिपकर तुकबन्दियाँ लिखने वाले प्रसाद का अल्हड़-कवि पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही दुकान पर बैठकर बही-खातों के रद्‌दी कागजों पर कविता की अराधना किया करता था। सन् 1908 तक प्रसाद के द्वारा ब्रजभाषा में रचित कविताएँ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी।

प्रसाद जी ने 11 वर्ष की बाल्यावस्था में अपनी माता के साथ पुष्कर जी, ओंकारेश्वर, जयपुर, उज्जैन, ब्रज मण्डल तथा अयोध्या आदि स्थानों की यात्रा की थी। भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सम्पदा के अद्‌भुत दृश्यों का आस्वाद भी उन्होंने लिया था। पर्वतों, झरनों, लहरों और कानन-कुसुमों की चाँदनी रातों में विहार भी किया था। जगन्नाथपुरी की यात्रा में सागर की विशालता गंभीरता तथा उत्ताल तरंगों की गर्जना सुनी थी तो माँ पृथ्वी के अंचल में विराजमान हिमगिरी के उत्तुंग शिखर का आनन्द भी लिया था। इन्हीं सब अद्‌भुत प्रकृति-शक्तियों ने कवि-हृदय को प्रेरणा प्रदान की।

पारिवारिक बाधाओं और विपदाओं से विचलित न होकर अडिग रहने वाले प्रसाद ने अपनी महाजीवट-शक्ति से जीवन की सभी विषम परिस्थितियों का सामना किया और सदैव आनन्द को जीवन का लक्ष्य माना। उन्होंने इसी दृष्टिकोण को स्वर देते हुए विश्व के महान महाकाव्य ''कामायनी'' में लिखा भी है-

जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।

संस्कृत और अंग्रेजी के नियमित अध्ययन से उन्हें वेद-उपनिषदों के साथ-साथ पुराण, महाभारत तथा अन्य ऐतिहासिक- सांस्कृतिक महाकाव्यों एवं ग्रन्थों के अध्ययन की प्रेरणा मिली। भारतीय संस्कृति के प्रति यहीं से श्रद्धा उत्पन्न हुई तो अतीत के प्रति रुचि भी जागृत हुई।

प्रसाद जी कसरत और व्यायाम में भी नियम से लीन रहते थे। कुश्ती और दंगल तथा गरिष्ठ खुराक उनके शौक थे। माता-पिता तथा ज्येष्ठ भाई के स्वर्ग-प्रस्थान के बाद भी इस संघर्षरत कवि को दुर्भाग्य से जूझते रहना पड़ा। विवाह स्वयं किया तो कुछ ही वर्ष बाद पत्नी चल बसीं। दूसरा विवाह सम्पन्न हुआ तो पुत्र-जन्म पर पत्नी और पुत्र दोनों परलोक सिधार गए। अब कवि-हृदय पूर्णतः टूट गया। गहरी चोट उनके हृदय पर लगी और वे पारिवारिक जीवन के प्रति निराश से हो गए। दर्शन का गाम्भीर्य उन्हें घेरता गया। किन्तु नियति का खेल निराला है भाभी और मित्रों के आग्रह पर तीसरा विवाह किया। इसी पत्नी से उन्हें ''रत्नशंकर'' नाम एकमात्र पुत्र की प्राप्ति हुई।

व्यक्ति की दृष्टि से उच्चकोटि के महापुरुषों में गिने जाने वाले महाकवि प्रसाद ने परिवार और व्यापार के कठिन उत्तरदायित्वों को संभालते हुए भी गहन अध्ययन एवं मनन के दृढ़ सम्बल तथा नैसर्गिक प्रतिभा के वरदान से जो कुछ भी भारतीय साहित्य को दिया, उस पर हम सभी को गर्व है। हमारा दुर्भाग्य ही है कि ''छोटे से जीवन की कैसे, बड़ी कथाएँ आज कहूँ'' कहने वाला बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न वह महान कलाकार-व्यक्तित्व, अधिक दिनों तक हमारा मार्गदर्शन न कर सका। जनवरी सन् 1937 में प्रसाद जी बीमार पड़ गए और चिकित्सकों ने घोषित कर दिया कि उन्हें राज्यक्षमा हो गया। दिन-प्रतिदिन उनका स्वास्थ्य गिरता गया। डॉक्टरों ने उन्हें काशी छोड़कर पहाड़ों पर जाने की सलाह दी। किन्तु प्रसाद जी काशी नहीं छोड़ना चाहते थे। परिणामतः सन् 1937 में 48 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने यह शरीर छोड़ दिया। ऐतिहासिक घटनाओं के भीतर प्रविष्ट होकर तत्व-चिन्तन से उनके मर्म का उद्घाटन करने वाली ज्ञान की असाधारण-प्रतिभा से संपूर्ण-भारतीय-साहित्य वंचित हो गया। अत्यंत सौम्य, शांत और गम्भीर व्यक्तित्व का सांसारिक संघर्ष समाप्त हो गया। विश्व साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाला वह आकर्षक, तथा प्रभावशील व्यक्तित्व जिसने ''कामायनी'' जैसा उत्कृष्ट महाकाव्य देकर सभी को हतप्रभ कर दिया, दुर्भाग्य से असामयिक-मृत्यु का शिकार हो गया। इस युगान्तकारी भव्य-व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा उद्देश्य को समझने के लिए उन्हीं की ये पंक्तियाँ कितनी सटीक जान पड़ती हैं-

इस पथ का उद्देश्य नहीं है,
शान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं

8.3 युग परिवेश

कवि अपने युग-परिवेश से प्रभावित ही नहीं होता, बल्कि अपनी युगांतकारी दृष्टि तथा कृतियों से उसे प्रभावित भी करता है। कभी वह अतीत की प्रेरणा से नवनिर्माण का संकल्प दोहराता है तो कभी नवनिर्माण से भविष्य के लिए एक अजर-अमर अतीत का सृजन करता है। समाज और राष्ट्र की स्थिति ही नहीं, साहित्य की परंपरा भी कवि और काव्य का निर्माण करती है। जयशंकर प्रसाद भी अगर अपने पूर्ववर्ती एवं युगीन परिवेश से प्रभावित होते हैं तो परवर्ती वातावरण को दिशा एवं दृष्टि देकर एक प्रबल वर्तमान का निर्माण भी करते हैं। प्रसाद, हिंदी सहित्य के काव्य इतिहास में जब प्रवेश करते हैं उस युग को द्विवेदी-युग के नाम से जाना जाता है। उस युग में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन हो ही रहे थे, साहित्यिक दृष्टि

से भी एक बदलाव आ रहा था। गांधी, तिलक, राजा राम मोहन राय, सुभाष चन्द्र बोस एवं पटेल आदि अनेकों क्रांतिकारी नेता स्वतंत्रता के विद्रोही स्वर को बुलन्द कर रहे थे तो साहित्यिक दृष्टि से भी एक बदलाव आ रहा था। गांधी, तिलक, राजा राम मोहन राय, सुभाष चन्द्र बोस, एवं पटेल आदि अनेकों क्रांतिकारी नेता स्वतंत्रता के विद्रोही स्वर को बुलन्द कर रहे थे तो साहित्य के क्षेत्र में भी विषय एवं भाषा का विद्रोह मुखर हो रहा था। प्रसाद के सामने एक तरफ तो सामाजिक-अभाव, सांस्कृतिक-विघटन, नैतिक-मूल्यों का ह्रास तथा आर्थिक एवं राजनैतिक बदलाव चुनौती बना था तो दूसरी तरफ स्वर्णिम अतीत के प्रति हो रहा अन्याय, भारतीय काव्य एवं साहित्य परंपरा के बिखरते-छूटते मूल्यों की पीड़ा और सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के दूर होते जाने का दर्द भी प्रश्न बना हुआ था। प्रसाद ने इन सभी समस्याओं से जूझने के लिए सृजनात्मक-स्वीकृति और कलात्मक-विद्रोह को चुना। पूर्व प्रचलित दीर्घ भारतीय काव्य परंपरा के मूल्यों को चिन्तनशील-अतीतपरक-दृष्टि से संजोया और युगीन विघटन एवं पतनकारी प्रवृत्तियों का स्वच्छन्दतावादी दृष्टि से विद्रोह किया। काव्य और दर्शन का अद्‌भुत समन्वय कर उन्होंने युग और देश की चेतना को काव्य के माध्यम से मुखर स्वर दिया।

प्रसाद का युग वास्तव में बीसवीं-शताब्दी-पूर्वार्द्ध का युग है। 18वीं शताब्दी का विद्रोह तो यहाँ आकर शांत हो चुका था। भारतीयों को समानता और धार्मिक स्वतंत्रता का आश्वासन भी मिलने लगा था। किन्तु पश्चिम की धारणाएँ एवं विचारधाराएँ धीरे-धीरे देश में प्रवेश पाने लगी थीं, रूसों और वॉल्टेयर के राजनीतिक विचार फैलने लगे थे। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अनेक विचारधाराएँ भारत में प्रविष्ट होने लगी थीं।

ऐसे में देश ब्रहम-समाज और आर्य-समाज जैसी कई समाज सुधारक संस्थाओं के नेतृत्व में सांस्कृतिक चेतना की नई दिशा खोजने लगा था। दक्षिण भारत में थियोसाफी का आविर्भाव, बनारस में एनीबैसेन्ट की कोशिश, बंगाल में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के लोक-संग्रह एवं समाज-सुधार जैसे कई प्रयास नई जागृति एवं चेतना को प्रसारित कर रहे थे। इन सभी आंदोलनों के मूल में देश-प्रेम एवं देश-सेवा की भावना कार्यरत थी। तिलक अपने क्रांतिकारी पत्र ''केसरी'' से कर्म और स्वराज्य की प्रेरणा दे रहे थे। राष्ट्रीयता की इस प्रबल भावना ने सभी देशवासियों को अतीत से प्रेरित होकर एकजुट होने की चेतना प्रदान की।

साहित्य में भी इसी आन्दोलित एवं क्रांतिकारी परिवर्तन ने प्रवेश किया। परिणामतः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में नवजागरण की नवीन परंपरा का आविर्भाव हुआ। समाज सुधार, रूढ़ियों से मुक्ति, कुरीतियों का विरोध तथा साहित्य की नई दिशा जैसे कार्यभार का दायित्व संभालते हुए भारतेन्दु युग में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना, देश-प्रेम, समाज-सुधार तथा प्राचीन एवं नवीन का मिश्रण जैसे कई पक्ष उभरकर सामने आये। काव्य के भाव, भाषा, शैली एवं विचार सभी में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, कविता, पत्र-पत्रिकाएँ सभी कुछ इन मिशन में कार्यरत हुए। पुनीत भावों को नेतृत्व देने का कार्य भारतेन्दु करते रहे। प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण 'प्रेमघन' तथा जगमोहन सिंह आदि कई लेखक इस दिशा में भारतेन्दु को सक्रिय योगदान देते रहे। परिणामतः काव्य रीतिकालीन घोर शृंगारिकता के चुंगल से निकल कर जन-जन के जीवन से जुड़ता चला गया। इस युग के साहित्य एवं साहित्यकारों ने प्रसाद जी को भी एक पृष्ठभूमि प्रदान की। भारतेन्दु के बहुमुखी व्यक्तित्व से तो प्रसाद जी अत्यंत प्रभावित हुए भी।

20 वीं शताब्दी के आरम्भ में गांधी तथा मालवीय जी जैसे युग-पुरुषों ने सत्य-अहिंसा का जो मार्ग दिखाया वह भी अपने आप में एक दृष्टांत बना। अंग्रेजों द्वारा हिन्दू-मुस्लिमों में वैमनस्य पैदा करने के प्रयासों को भारतीय मार्ग-दर्शकों द्वारा प्रचार की जा रही शिक्षा एवं नीति ने काफी हद तक रोका। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की महान विभूति बने रवीन्द्रनाथ टैगोर का आगमन हुआ। हिंदी एवं हिन्दुस्तान के प्रति पत्र-पत्रिकाओं ने सोचना-लिखना प्रारंभ किया। द्विवेदी युग की सर्वप्रथम पत्रिका ''सरस्वती'' ने इस दिशा

में अहम भूमिका निभाई। विभिन्न प्रयोगशील एवं सृजनशील विचारधाराओं को पत्रिकाओं एवं साहित्य के माध्यम से स्वर मिलने लगा। द्विवेदी युग की विशेषता यह रही कि प्रत्येक मोर्चे पर जातीय भावनप्त का स्थान राष्ट्रीयता लेने लगी। अतीत का गौरवगान और पुराने आदर्शों की संकल्पना पुनः जागृत हुई। देवता, मनुष्य बनकर साहित्य में उतरे किन्तु अपने आदर्श एवं दृष्टांत रूप में ही। मानवता-भाव को आदर्श बनाकर इस युग के साहित्य में स्थान दिया जाने लगा। पौराणिक एवं ऐतिहासिक मूल्यों को अनुवाद और सृजन के माध्यम से उजागर किया जाता रहा। काव्य भाषा खड़ी बोली का परिमार्जन होने लगा। नये छन्द और नई शैली में काव्य ढलने लगे। यहीं पर स्वच्छन्दता का कुछ-कुछ आभास भी मिलने लगा था।

श्रीधर पाठक, अयोध्याप्रसाद उपाध्याय, महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा मैथिलीशरण गुप्त आदि कई कवि एवं साहित्यकार पत्र-पत्रिकाओं तथा काव्य वृत्तियों के माध्यम से हिंदी-विकास एवं परिष्कार में योगदान दे रहे थे। भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग की इन सभी काव्य प्रवृत्तियों का विस्तृत अध्ययन आप पिछले खंडों में कर चुके हैं। यहाँ केवल इतना स्पष्ट करना आवश्यक है कि राष्ट्रीयता को प्रतिनिधित्व देने वाले इस काव्य-युग में ही प्रसाद का साहित्य-क्षेत्र में आगमन हुआ। गुप्त जी के ''साकेत'', ''यशोधरा'', ''जयद्रथ वध'' तथा ''भारत-भारती'' जैसे कई ग्रन्थ, हरिऔध का ''प्रिय प्रवास'', रामनरेश त्रिपाठी के ''मिलन'',''पथिक'' और ''स्वप्न'', सियारामशरण गुप्त का ''उन्मुक्त'' तथा रायदेवी प्रसाद पूर्ण के ''वसंत-वियोग'' आदि कई ग्रन्थ जिस युग में मानव-प्रेम, लोक-सेवा, बौद्धिक उन्नयन, लोक-रक्षा, त्याग, कर्तव्य तथा देवत्व की पृष्ठभूमि बना रहे थे, उसी युग में महाकवि जयशंकर प्रसाद आगे की बागडोर संभालने को अवतरित हो रहे थे।

दूसरी तरफ अंग्रेजी-साहित्य में जिस स्वच्छंदतावादी काव्यांदोलन तथा गीतिकाव्य का प्रचार हुआ, था उसमें भी अनुभूति की तीव्रता एवं सत्यता को प्रमुख स्वर मिला था। कीट्स, शैली और बायरन आदि कई स्वच्छंदतावादी कवियों की वाणी में यौवन-आवेग के साथ-साथ विद्रोह भाव की भी अभिव्यक्ति हुई थी। प्राचीन और नवीन का मिलन, रूढ़ियों के प्रति विद्रोह तथा रहस्य भावना की प्रधानता आदि कई दृष्टियाँ साहित्य में समन्वित हुई थीं। शांति और आनंद जैसे उदात्त तत्व में काव्य और साहित्य का लक्ष्य तथा आदर्श बनें। मानवीयता का दर्शन आनन्द शिखर की खोज में निकल पड़ा। सन् 1915 के आसपास क्रांति का स्वर, क्रांतिकारियों के कर्म से ही नहीं साहित्यकारों के क्रांति गीतों से भी प्रस्फुटित होने लगा था। राष्ट्रीय आन्दोलन कई रूपों में उठ खड़े हुए थे। बंकिम चन्द्र के गीत जागृति की लहरियाँ फैलाने लगे थे। स्वच्छन्दतावादी- गीतात्मकता और मानवीय तथा भारतीय दर्शन एक प्रेरणा बन रहे थे। मार्क्स की समाजवादी- प्रवृत्तियाँ भी सक्रिय हो रही थीं। नारी के प्रति दृष्टिकोण बदलने लगा था। रवीन्द्र की गीताजंलि एकजुट होने का मूलमंत्र दे रही थी। ऐसे चुनौती भरे समाज और परिस्थितियों में प्रसाद जैसी महाशक्ति प्रवेश पा रही थी। कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा निबन्ध आदि क्षेत्रों में अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा एवं सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना परक दृष्टि लेकर नेतृत्व प्रदान करने का दायित्व संभाला जयशंकर प्रसाद ने। उनके समग्र साहित्य में इस पृष्ठभूमि को तथा इनकी निर्मात्री परिस्थितियों को देखा जा सकता है। राष्ट्र-प्रेम, अतीत के प्रति अनुराग एवं श्रद्धा, सांस्कृतिक मोह तथा मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना ही प्रसाद की पहचान बनते हैं। ''कामायनी'' जैसे महाकाव्यात्मक- महाग्रंथ के इस प्रणेता ने समग्र भारतीय दर्शन का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत कर इच्छा, ज्ञान एवं कर्म की जो आनन्दप्रद राह दिखाई है, वह अनन्य है, अन्यतम है, श्रद्धेय है। प्रसाद के समग्र साहित्य एवं काव्य-विशेष के संदर्भ में चर्चा हम आगे करेंगे। किन्तु, यहाँ यह स्पष्ट होना चाहिए कि समय, स्थिति परिवेश एवं घटनाओं के इस चक्र ने जिस वैविध्यमयी पृष्ठभूमि का निर्माण प्रसाद के लिए किया, प्रसाद ने उसी के परिप्रेक्ष्य में अपने साहित्य का सृजन कर एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण को स्थापित करने का सफल कार्य किया। अतः इस अपार क्षमता और अनन्त

शक्ति के प्रतिभा सम्पन्न कलाकार के श्रेष्ठतम रचना-संसार का अध्ययन ही अब हमारा लक्ष्य होगा।

8.4 रचनाएँ और रचना संसार

भावनाओं के मधुर गायक तथा काव्य की विशिष्ट-सृष्टि के निर्माता जयशंकर प्रसाद जितने महान हैं उनका रचना संसार भी उससे कम विशाल या विराट नहीं। इस महान् कृतिकार ने कविकर्मी जीवन-साधना में संसार के अनुभवों की मार्मिक प्रतिक्रिया को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति देकर साहित्य को प्रेरणा प्रदान की तथा समूचे विश्व को एक नव्य-बोध भेंट किया। सांस्कृतिक चेतना से ओत-प्रोत साहित्य भंडार देने वाले बहुमुखी-प्रतिभा के इस धनी व्यक्तित्व ने काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा निबंध जैसी कई विधाओं में एक साथ मानव, समाज, देश तथा युग की अनेकों समस्याओं को ही उजागर नहीं किया उनके समाधान की राह भी प्रशस्त की। पद्य और गद्य में बराबर अधिकार रखते हुए इतिहास और संस्कृति के समर्थ आख्याता बने महाकवि प्रसाद पूरे हिंदी साहित्य में सबसे अलग दिखाई पड़ते हैं। अपने व्यक्तिवादी रूप में वेदना, करूणा तथा प्रेम दर्शन की अभिव्यक्ति करते हुए प्रसाद एक उच्चतम भावभूमि पर पहुँचते हैं और यहीं समग्र विश्व का आत्मवाद, आनन्दवाद तथा आध्यात्मिकता की भावना से परिचय भी कराते हैं।

इस इकाई में हमारा उद्देश्य महाकवि प्रसाद के काव्य संसार की मूल चेतना तथा उनकी काव्य कृतियों के भाव-जगत को अनुभूत करना है। अतः काव्य-इतर अन्य विधाओं में सृजित उनकी काव्य-कृतियों का परिचय पाते हुए हम मूलतः उनके काव्य-लोक पर ही केन्द्रित रहेंगे। आइये सर्वप्रथम उनके रचना-संसार पर दृष्टि डालें-

काव्य रचनाएँ: चित्राधार, प्रेम-पथिक, करूणालय, महाराणा का महत्व, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर तथा कामायनी।

नाटक: सज्जन, कल्याणी-परिणय, प्रायश्चित, राज्यश्री, विशाख, अज्ञातशत्रु, जनमेजय का नागयज्ञ,कामना, स्कन्दगुप्त, एक घूँट, चन्द्रगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी।

उपन्यास: कंकाल, तितली और इरावती (अपूर्ण)

कहानी-संग्रह: छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इन्द्रजाल।

निबंध: काव्य और कला तथा अन्य निबंध।

इस प्रकार आनन्दवाद को जीवन की साध्य तथा समरसता को साधन मानने वाले इस विश्व-कल्याण के प्रतिनिधि कवि ने अपने साहित्य-सागर की अपार जलराशि के भीतर अमृत का एक ऐसा कलश रख दिया है जो युगों-युगों तक इस सागर की शरण में आने वालों के विष को प्रभावहीन बनाकर उन्हें अम्बर-आनन्द की कल्याणकारी एवं समरस भूमा तक ले जाता रहेगा। इच्छा, ज्ञान और कर्म की गीतात्मक राह को पुनः प्रशस्त करने वाले इस अन्वेषी ने समरसता में लय होने का संगीत दिया।

प्रसाद जी ने अपनी काव्य-यात्रा आठ-नौ वर्ष की अवस्था में प्रारंभ कर दी थी। नौ वर्ष की अवस्था में प्रसाद को संस्कार सम्पन्न कराने के लिए जौनपुर और विन्ध्याचल ले जाया गया तो पर्वतीय सुषमा और भूमा के अंक में कलकल नाद करते झरनों के प्राकृतिक सौन्दर्य ने कवि के बाल-हृदय को मुग्ध कर लिया। इसी प्राकृति वैभव पर रीझकर उन्होंने ''कलाधर'' उपनाम से कविता का सृजन किया था। 1906 में यह कविता ''भारतेन्दु'' में प्रकाशित भी हुई थी-

हारे सुरेश रमेश धनेश, गनेशहु, सेस न पावत पारे।
पारे हैं कोटिक पातकी पुंज, कलाधार ताहि दिनोबिच तारे।

तारेन की गिनती सम नाहिं, सुवेते तरे प्रभु पापी बिचारे।
चारे चले न विरंचहि के, जो दयालु है संकर नेक निहारे।

''ब्रजभाषा'' में कविता लेखन प्रारंभ करने वाले इस कवि ने ''इन्दु'' पत्रिका के दूसरे अंक में ''प्रेम-पथिक'' प्रकाशित कराया। मूलतः ब्रजभाषा में लिखी गई इस रचना को बाद में कवि ने खड़ी बोली में रूपान्तरित भी किया। ''झरना'' के पूर्व की सभी कृतियाँ प्रसाद जी ने द्विवेदी-युग में तैयार कीं तथा शेष छायावाद में। अधिक दिनों तक ब्रजभाषा में कविता न करने वाले प्रसाद ने अपने भावों को युग और परिवेश की अपेक्षा के अनुसार ही खड़ी बोली में ढालना प्रारंभ किया और धीरे-धीरे वे खड़ी बोली के शीर्षस्थ कवि-पद पर आ विराजे। भाषा, छन्द, भाव तथा विचार की दृष्टि से अनेक रूपता में भी समरसता पैदा करने वाला यह गंभीर-चिंतक आरंभ में अयोध्यासिंह उपाध्याय की तरह संस्कृत गर्भित शैली को अपनाकर भी उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन करता है और अन्तर्मुखी कल्पना से सूक्ष्म भावनाओं को व्यक्त करने का सफल प्रयास करता है।

''चित्राधार'' कवि की सबसे पहली काव्य-कृति है। सन् 1909 से 1912 तक की पाँच रचनाएँ उसमें समाहित हैं। ''अयोध्या का उद्धार'', ''वन-मिलन'', ''प्रेम राज्य'' (पूर्वाद्ध तथा उत्तरार्द्ध), ''पराग'' और ''मकरन्द बिन्दु'' नामक इन रचनाओं में ''पराग'' ऐसा काव्य-संगह है जिसमें 24 स्फुट कविताएँ संकलित हैं। इसके बाद ''प्रेम-पथिक'', ''करूणालय'', तथा ''कानन कुसुम'' सन् 1913 में प्रकाशित हुई। ''कानन-कुसुम'' में सन् 1909 से सन् 1917 तक की 49 स्फुट कविताएँ एकत्र की गई हैं। सन् 1914 में ''महाराजा का महत्व'' प्रकाशित हुई। फिर सन् 1918 में 55 स्फुट कविताओं का संग्रह ''झरना'' प्रकाश में आया। इसी प्रकार सन् 1925 में ''आँसू'' सन् 1933 में 33 स्फुट कविताओं का अद्वितीय काव्य संग्रह ''लहर'' और सन् 1935 में विश्व का अन्यतम तथा अनुपम महाकाव्य ''कामायनी'' प्रकाशित हुआ।

ब्रजभाषा में लिखित प्रारंभिक कविताओं में प्रसाद प्रकृति को उद्दीपन के रूप में नहीं, आलम्बन के रूप में ग्रहण करने का प्रयत्न करते हैं। इसके बाद की कविताओं में प्रसाद ने संस्कृत साहित्य के भीतर से एक सुसंस्कृत प्रेरणा प्राप्त कर कविता में अपनी नूतन भावाभिव्यक्ति के द्वारा हिंदी काव्य-संसार में ही नहीं समूचे विश्व-काव्याकाश में भी अपना वैशिष्ट्य और नेतृत्व सिद्ध कर दिया। प्रसाद का अध्ययन गहन और व्यापक था। वेद, उपनिषद्, इतिहास और संस्कृति काव्य का मनन पूर्ण अध्ययन ही उनके कविता के उद्देश्य को निर्धारित करता है। ''आंसू'' के अन्त में कवि कहता है-

सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में,
बरसों प्रभात हिमकन-सा
आंसू इस विश्व-सदन में।

मनुष्य, समाज, राष्ट्र और विश्व- सभी के कल्याण का लक्ष्य लेकर चलने वाला कवि स्वयं अपनी कविता के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए ''कवि और कविता'' शीर्षक लेख में कहता है- ''श्रृंगार रस की मधुरता पान करते-करते आपकी मनोवृत्तियाँ शिथिल तथा अकुला गयी हैं। इस कारण अब आपको भावमयी उत्तेजनामयी, अपने को भुला देने वाली कविताओं की आवश्यकता है। अस्तु धीरे-धीरे जातीय, संगीतमयी, वृत्ति स्फुरणकारिणी, आलस्य को भंग करने वाली, आनन्द बरसाने वाली, धीर, गंभीर पद-विक्षेपकारिणी शांतिमयी कविता की ओर हम लोगों को अग्रसर होना चाहिए। अब देर नहीं है, सरस्वती अपनी मलिनता को त्याग रही है, और नवल रूप धारण करके प्रभातिक उषा को लजावेगी। एक बार वीणाधारिणी अपनी वीणा को पंचम स्वर में फिर ललकारेंगी। भारत की भारती फिर भी भारत की ही होगी।''

प्रसाद जी ने अपनी सभी काव्य कृतियों में ऐतिहासक सांस्कृतिक मूल्यों को धरोहर रूप में संजोया, संवारा और निखारा है। ''प्रेम पथिक'' में प्रकृति का वैभव, प्रेम की अपारता तथा प्रेम का उदात्त, निर्मल एवं अलौकिक महत्व एक पथिक की यात्रा के द्वारा स्पष्ट किया गया है। ''अयोध्या का उद्धार'' में अयोध्यानरेश महाराजा राम के ज्येष्ठ पुत्र कुश द्वारा अयोध्या के पुनरूत्थान का वर्णन किया गया है। यह कालिदास कृत ''रघुवंश'' के सोलहवें सर्ग पर आधारित है। इसमें प्राकृतिक सुषमा के सुंदर वर्णन के साथ-साथ राजा के कर्त्तव्य कर्म की भी सराहनीय व्याख्या की गई है।

''वन मिलन'' ''इन्दु'' में ''वानवासिनी बाला'' नाम से प्रकाशित हो चुका है। कालिदास कृत ''शाकुंतलम्'' से प्रेरणा पाकर कवि ने इस कृति में प्रकृति की अनुपम छटा के साथ-साथ शकुन्तला के विरह, सखियों की आर्द्रता तथा दुष्यंत के शापमुक्त होकर शकुन्तला से मिलन आदि को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'रोला' छंद और ब्रजभाषा में रचित इस कृति में प्रसाद की मौलिक एवं स्वच्छन्द कल्पना भी यत्र-तत्र दिखाई देती है। ''प्रेम राज्य'' ब्रजभाषा में लिखित तथा रोला और छप्पय छंदों से सुसज्जित कृति है। इसमें विजयजनगर के राजा सूर्यकेतु की सेनापति के विश्वासघात से हत्या और फिर सेनापति की पत्नी के प्रायश्चित और दृढ़ संकल्प द्वारा विश्वासघाती पति के त्याग को दर्शाया गया है। स्वदेश प्रेम और राष्ट्र सेवा इसका प्रमुख स्वर हैं। इनके अतिरिक्त चित्राधार की मुक्त कविताओं में ''पराग'' और ''मकरंद-बिन्दु'' शीर्षक संग्रह है। उनमें शरद, रजनी, चन्द्र, वर्षा, नारी, उद्यान, प्रभात तथा कुसुम आदि प्रकृति तत्वों से सम्बद्ध कविताओं को तथा प्रेम और विरह संबंधी कविताओं को रखा गया है। इस कविता संग्रह में प्रसाद बंगला के ''प्यार'' और ''त्रिपदी'' तथा संस्कृति के मालिनी, सुंदरी और प्रियम्बदा आदि छंदों का प्रयोग करते हैं। मकरंद-बिन्दु की भक्ति परक रचनाओं में संवैयों का भी सुंदर प्रयोग किया गया है।

''कानन-कुसुम'' के अंतर्गत आख्यानक, प्रकृति-विषयक, भक्ति-विषयक और प्रेम-विषयक कविताएँ संकलित की गई हैं। महापुरुषों के प्रशस्तिगान तथा कतिपय सामयिक समस्याओं को भी इन कविताओं में उजागर किया गया है। पौराणिक एवं ऐतिहासिक आधार पर लिखित चित्रकूट, भरत, श्रीकृष्ण जयंती, कुरूक्षेत्र तथा वीर बालक आदि कुछ कविताएँ इनमें प्रमुख हैं। प्रभो, नमस्कार, वंदना तथा विनय आदि कुछ कविताएँ भक्ति विषयक कविताएँ हैं। खड़ी बोली में रची गई इन कृति में ही इन्द्रधनुष, चन्द्रोदय तथा प्रभातिक-कुसुम जैसी छायावादी काव्य रचनाएँ पहली बार प्रकाश में आई।

''करूणालय'' गीति नाट्य के ढंग पर लिखी गई महत्वपूर्ण कृति है। इसमें पाँच दृश्य हैं। इसमें राजा हरिश्चन्द्र द्वारा शुनः शेष के नरमेध यज्ञ में बलि दिये जाने की कथा का सुंदर वर्णन किया गया है। नरमेध-यज्ञ को सामयिक समस्या के परिप्रेक्ष्य में देखने का सफलतम प्रयास प्रसाद ने किया है। भाषा खड़ी बोली ही है। ''महाराणा का महत्व'' शीर्षक काव्य कृति के अंतर्गत रहीम खान-खाना की बेगम को राजपूतों द्वारा बंदी बनाये जाने और महाराजा प्रताप द्वारा उन्हें मुक्त कराके उनके पति के पास ससम्मान पहुँचा देने की ऐतिहासिक घटना का मार्मिक वर्णन है। कवि प्रसाद की अनुपम कल्पना और इतिहास की वीरता भरी गाथा का बिम्बात्मक वर्णन सराहनीय बन पड़ा है। ओज भरी भाषा कविता की शक्ति बनी है।

''झरना'' के अंतर्गत वैयक्तिक प्रेम और विरह की एक अविरल धारा प्रवाहित होती है और यह ''आँसू'' में ढलकर ''लहर'' में समाहित हो जाता है। मांसल अनुभूति धीरे-धीरे सूक्ष्म और छायात्मक बनती जाती है। व्यक्तिगत व्यथा धीरे-धीरे प्रकृति के कण-कण में परिवर्तित होने लगती है। युवा-मिलन की प्रेम-पगी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद तथा विरह-मिलन की हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति इसमें हुई है। यहीं रहस्यवादी विरह की व्यंजना भी पहली बार देखने को मिलती है। इस कृति में प्रसाद की भाषा और शैली निरंतर मंझ कर निखार पाती रही है।

आँसू में शुद्ध रहस्यात्मक अनुभूति तथा लौकिक विरह भावना का अद्‌भुत मिश्रण है। रहस्यवादी-भाव धारा वाली यह कृति छायावाद की अन्यतम कृति है। व्यापक प्रेम के इस अमर प्रेमी कवि ने इस कृति में सुख-दुख में एक स्वस्थ सामंजस्य स्थापित करना चाहा है। प्रतीक-विधान तथा 28 मात्राओं वाला ''आँसू'' छन्द इस कृति की विशिष्ट पहचान बनाते हैं। अनुपम तथा अनूठी कल्पना और विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति को प्राणदा-शक्ति देते, प्रबल-शब्द छायावाद की अमूल्य निधि बन जाते हैं।

''लहर'' तक आकर भावना की अश्रुधाराएँ धीरे-धीरे बौद्ध-दर्शन की वैचारिक लहरों में समाने लगती हैं। लोक-मंगल की भावना का संकल्प यहाँ आकार रूपायित होने लगता है। बौद्ध दर्शन की करूणा कवि को एक नई दृष्टि देती है। यहीं आकर कवि ''आनन्दवाद'' की कल्पना करता है।

आनन्दवाद की यह कल्पना ''कामायनी'' तक आते-आते साकार होती है। पन्द्रह सर्गों के इस अन्यतम महाकाव्य में प्रसाद की काव्य प्रतिभा अपने चरम शिखर पर पहुँचकर संपूर्ण-विश्व को प्रदीप्त करने लगती है। पौराणिक जल-प्लावन की घटना को आधार बनाकर कवि प्रसाद ने इस अन्योक्ति परक महाकृति में प्रकृति, प्रेम, कर्म, रहस्य, दर्शन, इच्छा, ज्ञान, वासना तथा आनंद आदि का मर्मस्पर्शी ही नहीं स्तब्ध कर देने वाला अद्‌भुत वर्णन प्रस्तुत किया है। प्रतीकों के माध्यम से अन्य अर्थों को सफलतापूर्वक वहन करती यह कर्मकथा भावों के अमूल्य-रत्नों की धरोहर है। आनन्द और आस्था के मार्गदर्शक प्रसाद ने कामायनी में बुद्धिवाद का विरोध और हृदय-तत्व की प्रतिष्ठा करते हुए शैव दर्शन के आनन्दवाद को ही जीवन के पूर्ण उत्कर्ष का साधन घोषित किया है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि प्रसाद के समग्र काव्य-संसार में एक अलौकिक तथा विलक्षण शक्ति विद्यमान है और उनके प्रगीतों में यह शक्ति अपनी चरम-सीमा पर पहुँची हुई है। जीवन और दर्शन में परस्पर निर्भरता सिद्ध करते हुए इस महाकवि ने पौराणिकता एवं ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में भारतीयता, मानवीयता, संस्कृति तथा दर्शन आदि को युगीन समस्याओं से जोड़ा ही नहीं, उनका समाधान भी खोजा और प्रस्तुत किया। इसीलिए वे समूचे संसार को उद्‌बोधित करते हुए कहते भी हैं-

भुनती वसुधा तपते नग
दुखिया है सारा अग जग
बह जा बन करूणा की तरंग,
जलता है यह जीवन पतंग।

बोध प्रश्न1

1. नीचे कुछ कथन दिए जा रहे हैं। सही या गलत के चिह्न से चिह्नित कीजिए-

i) ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना तथा मानवतावादी दृष्टि के प्रचार-प्रसार का दायित्व निभाने वाले प्रसाद जैसे अन्य कई साहित्यकार हिंदी-साहित्य में उपलब्ध है। ( )

ii) प्रसाद की अलौकिक-प्रतिभा ने गद्य और पद्य दोनों में अपनी वैविध्यमयी तथा कल्याणकारी दृष्टि की छाप छोड़ी है। ( )

iii) प्रसाद को परिवार,समाज एवं राष्ट्र के स्तर पर सदैव अनुकूल तथा सम स्थितियाँ ही मिलती रहीं। ( )

iv) प्रसाद जी के घर पर कवियों, गवैयों, पंडितों, वैद्यों, यांत्रिकों भाट-बाजीगरों तथा ज्योतिषी आदि विद्वानों का आना-जाना लगा रहता था। ( )

v) प्रसाद जी को हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत तथा अंग्रेजी का गहन ज्ञान था और उन्होंने वेद, पुराण, इतिहास तथा उपनिषदों का भी खूब अध्ययन किया था। ( )

2. नीचे दिए रिक्त स्थानों के लिए उपयुक्त विकल्प को चिन्हित कीजिएः

i) महाकवि प्रसाद का जन्म सन् .....में हुआ था। (सन् 1902,1880,1889)

ii) प्रसाद जी के ज्येष्ठ भाई का नाम ..... था। (श्री देवी प्रसाद, श्री रत्नाशंकर, श्री शंभुरत्न)

iii) प्रसाद जी को स्कूल की शिक्षा से ..... वर्ष की अवस्था में वंचित होना पड़ा था। (12 वर्ष, 18 वर्ष, 14 वर्ष)

iv) प्रसाद की ब्रजभाषा में रचित कविताएँ सन् ..... में पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगी थीं (1908,1911,1914)

3. एक-दो पंक्तियों में उत्तर लिखिएः

i) प्रसाद की पाँच काव्य कृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) प्रसाद जी की मृत्यु कब और कैसे हुई?

.....

.....

.....

.....

iii) प्रसाद जी के पाँच प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

iv) प्रसाद जी के निबंध संग्रह का क्या नाम है?

.....

.....

.....

.....

v) प्रसाद के दो प्रमुख उपन्यासों और दो कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

नोटः इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

8.5 प्रसाद काव्यः प्रमुख स्वर

प्रसाद का काव्य, जैसा कि अभी हमने देखा भी, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित एक ऐसी काव्य-सृष्टि है जिसमें कई भाव, कई विचार कई दृष्टियाँ, कई समस्याएँ तथा कई चुनौतियाँ एक साथ उभर कर आती हैं और प्रसाद आस्था, निष्ठा, कर्म तथा दायित्व के माध्यम से उनका निर्विवाद समाधान भी खोज निकालते हैं। राष्ट्र की खोयी हुई चेतना को अतीत के गह्वरों से खोज कर सांस्कृतिक-पुनरुत्थान का सफल प्रयत्न करने वाला यह कवि वेदना, करुणा, प्रेम प्रकृति तथा मानवता की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति का प्रतिनिधि बन कर उभरता है। राष्ट्रीय उत्थान के लिए इतिहास का पुनर्जागरण उसे सक्रिय करता है तो देश की परंपरा और सभ्यता की स्मृतियाँ उसे नवजीवन प्रदान करती हैं। आध्यात्मिक चेतना उसके विचारों को दिशा एवं दृष्टि देती हैं और वही दृष्टि समग्र संसार को आनन्द-शिखर तक पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः देश की विविध विषम परिस्थितियों में हिंदी कविता के प्रांगण में उतरने वाले इस महाकवि ने सूक्ष्म पर्यवेक्षण से हिंदी कविता को नए विषय, नई चेतना, नई पृष्ठभूमि और नई दृष्टि प्रदान की। प्रसाद के इस नए नव-आंदोलन वाले काव्य-संसार में कई प्रवृत्तियाँ उभरीं, जिन्होंने नवजागरण का संदेश दिया यहाँ हम प्रसाद काव्य की उन्हीं प्रमुख प्रवृत्तियों अथवा विशेषताओं पर दृष्टि डालेंगे।

8.5.1 इतिहास एवं संस्कृति

प्रसाद का आविर्भाव हिंदी साहित्य के ऐसे युग में हुआ जब स्वतंत्रता संग्राम का जोश और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक गरिमा को सुरक्षित रखने की छटपटाहट विदेशी सत्ता के उन्मूलन की राह खोजने को बाधित कर रहे थे। वैमनस्य एवं भेदभाव इस सम्मिलित क्रांति-यज्ञ की आहूति बन चुके थे। प्रसाद जी ने राजनीति, संस्कृति, धर्म व्यापार मूल्य तथा विचारों भावों के ऐसे उथल पुथल मचा देने वाले युग में इतिहास एवं संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा भाव पैदा किया। काव्य, नाटक तथा निबन्ध आदि के माध्यम से कवि गरिमामंडित भारतीय इतिहास तथा पुनीत भारतीय संस्कृति की झांकी बार-बार प्रस्तुत करता है। प्राचीन एवं ऐतिहासिक घटनाओं का सहारा लेकर इस अन्वेषी कवि ने भारतीय संस्कृति के बिखरे अवयवों को एकत्रित कर जन-जन में इसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न की तथा भारतीय और विदेश संस्कृति के संगम में आधुनिक मानवता को विकास देने वाली संस्कृति को भी तैयार किया। प्रसाद ने रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद तथा अन्य ऐतिहासिक एवं संस्कृत ग्रंथों का अनुशीलन करते हुए अपने समग्र साहित्य को शक्ति प्रदान की। 'चित्रकूट', 'अयोध्या का उद्धार', 'महाराजा का महत्व', 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण', 'पेशाला की प्रतिध्वनी' तथा 'कामायनी' जैसी काव्य कृतियाँ इसके प्रमाण हैं तो 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी','विशाख','जन्मेजय का नागयज्ञ' जैसे नाटक भी इसी का उदाहरण हैं। इसी प्रकार की कहानियों में भी प्रसाद की इसी दिव्यदृष्टि को देखा जा सकता है। प्रसाद के पात्र भी इतिहास एवं संस्कृति के विशिष्ट पात्र हैं। 'भरत' और 'वन-मिलन' कविता में वे कालिदास को आधार बनाते हैं तो 'कामायनी' और 'करुणालय' में पुराण

कथाओं को। 'अजातशत्रु' नाटक में बौद्ध कालीन आधार को अपनाते हैं तो 'चंद्रगुप्त' में मौर्यकालीन आधार को बनाया गया है। 'स्कन्दगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' में गुप्तकालीन इतिहास को उजागर करने का सफलतम प्रयास है तो 'राज्यश्री' और 'प्रायश्चित' में मध्यकालीन इतिहास आधार बना है। इसी प्रकार नूरी, दासी, चित्तौड़, गुलाम, ममता, जहांनारा, तानसेन, उद्धार तथा स्वर्ग के खंडहर जैसी कई कहानियाँ भी ऐतिहासिक आधार रखती हैं। अतः यह तो स्पष्ट ही है कि प्रसाद ने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वलतम रूप को प्रस्तुत करने के लिए ही इतिहास का सहारा लिया और उसे साहित्यिक स्पर्श देने के लिए कहीं-कहीं मर्मस्पर्शी कल्पना का अदभुत मिश्रण भी कर दिया। कवि इतिहास और कल्पना के बहुरंगी चित्रों से अपने साहित्य को सुसज्जित ही नहीं करता, प्राचीन भारत की स्वर्णिम झांकी प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति के निखरे हुए स्वरूप को भी दर्शाता है। अतः इतिहास के अंधकार युग से लेकर अंग्रेजी युग तक की सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं की आधार भित्ति पर कवि अपना ''साहित्य-प्रसाद'' निर्मित करता है। यही कारण है कि उनके काव्य, नाटक एवं कहानियों आदि में इतिहास के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं की आत्मा झलकती जान पड़ती है। 'प्रलय की छाया' जैसी ऐतिहासिक गीति रचना में गुर्जर प्रदेश की अनिंद्य सुन्दरी कमला का सुल्तान अलाउद्दीन द्वारा बंदी बनाया जाना सांस्कृतिक-इतिहास पर कलंक माना जाता रहा किन्तु महाकवि प्रसाद ने चित्तौड़ की रानी पद्मिनी से रूप स्पर्धा करती कमला की विवशता पर नया प्रकाश डाला-

मैं भी थी कमला
रूप रानी गुजरात की।
सोचती थी
पद्मिनी जली थी स्वयं किन्तु मैं जलाऊँगी
वह दावानल ज्वाला
जिसमें सुल्तान जले।
देखें तो प्रचण्ड रूप ज्वाला सी धधकती
मुझको सजीव वह अपने विरूद्ध

कवि ने कमला के चरित्र में आदर्श प्रतिष्ठित करने के लिए ऐतिहासिक तिथियों और कतिपय तथ्यों में व्यतिक्रम भी किया हो, किंतु प्रसाद का लक्ष्य एक साहित्यकार का लक्ष्य रहा। तथ्य मात्र प्रस्तुत करना उनका ध्येय न था।

इसी तरह 'शेरसिंह का शस्त्र समर्पण' में सिख इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना को उजागर किया गया है। प्रसाद ने महाराजा रणजीत सिंह के बाद के पंजाब और रानी जिन्दन की विवशता का अत्यंत सजीव वर्णन किया है। अंग्रेजों और सिक्खों के मध्य पहला बड़ा युद्ध चिलयान वाला में हुआ और अन्तिम गुजरात (पंजाब) में। प्रसाद ने गुजरात के इस युद्ध में सिक्खों की इस वीरता का बखान किया है।-

सिक्ख थे सजीव
स्वत्व रक्षा में प्रबुद्ध थे।
जीना जानते थे
मरने की जानते थे सिक्ख

स्पष्ट है कि प्रसाद इतिहास का आश्रय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष एवं स्वरूप को हमारे सम्मुख बार-बार उजागर करने के लिए ही लेते हैं। दर्शन और आध्यात्म कभी उन्हें हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर जाने की प्रेरणा देते हैं तो कर्त्तव्य और धर्म उन्हें इतिहास के गहल्रों में उतरने की शक्ति देते हैं। प्रसाद साहित्य की मूल रचना को स्पष्ट करती ये पंक्तियाँ देखिएः

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हँस अभिनन्दन किया, और पहनाया हीरक द्वार।

- स्कन्दगुप्त

औरों को हंसते देखो, मनु
हँसों और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तुत कर लो
सबको सुखी बनाओ

- कामायनी

जननी जिसकी जन्मभूमि हो, वसुन्धरा ही काशी हो।
विश्व स्वदेश, भ्रात मानव हों पिता परम अविनाशी हो।

- कानन-कुसुम

इस प्रकार के गौरव गान तथा सांस्कृतिक श्रद्धा से युक्त गीत गाने वाला यह महाकवि 'मनु' जैसे आदि-पुरुष का निरूपण करके भी जीवन संघर्ष की राह दिखाता है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में कार्नेलिया विदेशी बालिका होकर भी 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' गीत गाकर भारत भूमि के प्रति अपने प्यार को दर्शाती है। आदि पुरुष मनु हिमालय के उत्तुंग शिखर पर विराजते हैं। निश्चित ही प्रसाद भारतीय इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति के पोषक-प्रहरी थे। सांस्कृतिक पुनरूत्थान की ये रेखाएँ उनके इसी अनुराग की परिचायक हैं। बाबा रामनाथ, चाणक्य तथा दाण्डयायन जैसे सांस्कृतिक प्रतीक-पात्र, धर्म और दर्शन को अद्‌भुत समन्वय, भारतीय आत्मवाद और सार्वभौमिकता की स्थापना और मानव संस्कृति की विजय का उदधोष-सब के सब प्रसाद, जी की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक श्रद्धा के गवाह हैं।

8.5.2 राष्ट्रीय चेतना और मानवीयता

हिंदी साहित्य के छायावादी युग में राष्ट्रीय एवं स्वातंत्र्य चेतना का मूल मंत्र पूरे देश में स्फूर्ति संचरित कर रहा था। मानवीय गुणों की स्थापना और इंसानी मूल्यों की प्रतिष्ठा प्रत्येक छायावादी कवि का लक्ष्य बन गया था। प्राचीन भारतीय गौरव और सांस्कृतिक-दार्शनिक मूल्यों की अभिव्यक्ति के प्रति कवि प्रसाद का अनुराग भी राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा बन रहा था। अतीत की चेतना भावुक कवि को जागृति की गति प्रदान करती रही और युगीन परिवेश उसके इन गीतों में मूल्यों की शक्ति जुटाता रहा। त्याग, एकता और आत्म-बलिदान की भावनाएँ ही नहीं, शक्ति, संगठन और शौर्य का गान भी आह्वान देने लगा। चन्द्रगुप्त नाटक में ''अलका'' नागरिकों को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती हुई राष्ट्रीय चेतना का संचार करती है-

हिमाद्री तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयं प्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो, बढ चलो।

प्रसाद के नाटकों में तो राष्ट्र चेतना कूट-कूट कर भरी ही है, काव्य भी इसी चेतना की जीवंत मिसाल है। कवि की राष्ट्रीयता, देश-भक्ति एवं देश प्रेम के प्रति यह दृढ़ भावना पौराणिक एवं ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से अभिव्यक्त भी हुई है। विदेशियों की पराजय, देश के प्रति उल्लास, श्रद्धा, समर्पण एवं बलिदान की भावना आदि कई काव्य

प्रसंग इसी आस्था के प्रमाण हैं, निराशा में आशा और विजय का मार्ग प्रशस्त करते कवि के ये भाव द्रष्टव्य है जिसमें सभर-संगिनी और रस-रंगिनी तलवार को जीवन साथी बताया गया है-

अरी रस-रंगिनी
सिक्खों के शौर्य भरे जीवन की संगिनी।
कपिशा हुई भी लाल तेरा पानी पार कर।
दुर्भद दुरन्त धमद दस्युओं की त्रासिनी-
निकल, चली जा तू प्रतारणा के कर से।

-शेरसिंह का शस्त्र समर्पण

यह वह भारत है जहाँ के योद्धा-वीर लड़ना और मिटना जानते हैं। शस्त्र हो तो कोई बात ही नहीं और न हों तो भी निश्चिन्त। ये हाथ और वज्र शरीर ही शस्त्र बन जाते हैं। हथेली पर प्राण लिये घूमने वाले ये राष्ट्र-भक्त सदैव जय के उपासक रहे हैं-

अहा खेलता कौन यहाँ शिशु सिंह से
आर्यवृन्द के सुन्दर सुखमय भाग्य सा
कहता है उसको लेकर निज गोद में-
खोल, खोल मुख सिंह-बाल, मैं देखकर
गिन लूँगा तेरे दाँतों को हैं भले
देखूँ तो कैसे यह कुटिल कठोर हैं।

- कानन-कुसुम

प्रसाद ने भारतीय जनता के हृदय में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत कर अत्याचारी अंग्रेज शासकों और देशद्रोहियों के प्रति खुल कर विद्रोह करने की सीख ही नहीं दी, मनुष्यता और मानवता का पाठ पढ़ा कर नैतिक एवं आदर्श मूल्यों की प्रतिष्ठा का मंत्र भी दिया। कवि की निजी दृष्टि का मानवीय बोध और इस बोध का आर्द्र स्वर जीवन के शाश्वत उपादानों के प्रति सजग करता है। मानव को सर्वोपरि मानने वाले इस महाकवि ने ''मनु'' को अपने इसी आदर्श मानस का प्रतीक बनाकर उसकी आन्तरिक भावनाओं में समाज की सीमाओं को रूपायित किया है। श्रद्धा ''मनु'' को ही जागृत सन्देश नहीं सुनाती, समस्त मानव जाति को अमन-मंत्र प्रदान करती है-

यह नीड़ मनोहर कृतियों का?
यह विश्व कर्म-रंगस्थल है।
है परम्परा लग रही यहाँ
ठहरा जिसमें जितना बल है।

मानवीय मूल्यों की दृढ़ स्थापना का यह संदेश संपूर्ण मानवता के लिए है। आधुनिक वैज्ञानिकता, भौतिकता और विषमताओं के विधि चित्रण प्रस्तुत करके भी प्रसाद स्वाभाविकता और प्रकृति के मर्म से कटने का दर्द ही व्यक्त करते हैं। दूसरों को हँसते देख सदैव प्रसन्न रहने की सीख देने वाली ''श्रद्धा'' समरसता का मार्ग प्रशस्त करती हुई मानव जाति की चतुर्दिक उन्नति की कामना करती है। हृदय की वृतियों का विस्तार कर जीवनी शक्ति का विकास करने की प्रेरणा देने वाला यह आशावादी आनन्द के चरम शिखर पर पहुँचना और पहुँचाना चाहता है-

विधाता की कल्याणी सृष्टि
सफल हो इस भूतल पर पूर्ण
पटें सागर, बिखरें ग्रह-पुंज
और ज्वालामुखियाँ हों चूर्ण,

शक्ति के विद्युत्कण जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरूपाय,
समन्वय उसका करें समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए।

8.5.3 प्रेम-व्यंजना

प्रसाद को यौवन और प्रेम सौन्दर्य की लहरियों का अत्यंत संयमी कवि कहा जाता है। यों तो पूरे छायावाद में ही प्रणय भावना का प्राधान्य रहा है और उसमें कवि की निजी भावात्मक दृष्टि मुख्य रही है। छायावाद की विशेषता रही है कि संस्कारशीलता के कारण उनकी प्रणयाभिव्यक्ति एक झीने आवरण में लिपटी रही है और उसने लाक्षणिक भाषा शैली में अभिव्यक्त पायी। प्रेम के आलम्बन के प्रति व्यक्त इनकी अनुभूति अत्यंत आन्तरिक, हार्दिक, सूक्ष्म एवं उदात्त बन कर उभरती है। प्रसाद के साहित्य में भी आदि से अन्त तक इसी प्रेम का स्वर थिरकता है। प्रेम का स्वच्छन्द रूप उसे एक पृथक भाव भूमि देता है तो समाज को एक व्यापक दृष्टि भी प्रदान करता है-

इस पथ का उद्‌देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना,
किन्तु चले जाना उस हद तक जिसके आगे राह नहीं।

हे जन्म-जन्म के जीवन साथी संसृति के दुख में
पावन प्रभात हो जावे जागो आलस के सुख में
जगती का कलुष आपावन तेरी विदग्धता पावे
फिर निखर उठे निर्मलता यह पाप-पुण्य हो जावे।

''कामायनी'' में प्रसाद प्रेम के तीनों रूपों राजस, तामस और सात्विक को अंकित करते हुए ''प्रेम'' और ''वासना'' की विस्तृत मीमांसा भी करते हैं। ''इड़ा'' वहाँ राजस प्रेम की प्रतीक है, ''मनु'' तामस प्रेम के और ''श्रद्धा'' सात्विक प्रेम की प्रतीक है।

वास्तव में कवि प्रसाद के लिए प्रेम जीवन का अत्यंत पावन, आलोकमय स्वस्थ और उदात्त उपकरण है। तभी तो वे इस उदात्त वृत्ति के संदर्भ में कहते हैं- ''जिसके प्रकाश में सकल कर्म बनते उज्जवल उदार।'' प्रेम में वह शक्ति है जिससे संसार का समस्त कलुष पुण्य में परिणत हो जाता है। ''प्रेम-पथिक'' इस मार्ग से आनन्द शिखर पर पहुँच जाता है। स्वार्थ से उठकर प्रेती आत्मोत्सर्ग की उच्च भूमि पर आसीन हो जाता है। सर्वोत्तम-समर्पण का यही दूसरा नाम है। ''पागल रे वह मिलता है कब, उसको तो देते ही हैं सब''- कहकर कवि आत्मदान के आदर्श की ओर संकेत करता है। ''प्रेम-पथिक'' ''लहर'' ''झरना'' और आँसू सभी में प्रसाद की उदात्त प्रेम दृष्टि के उज्ज्वल पक्ष के दर्शन होते हैं। वियोग प्रेम की कसौटी है। संयोग के मादक क्षणों की स्मृतियों का मधु प्रेमी पीता है।

खिंच जाये अधर पर वह रेखा,
जिसमें अंकित हो मधु-लेखा,
जिसको वह विश्व को देखा,
वह स्मिति का चित्र बना जा रे।
मेरी आँखों की पुतली में तू।
बन कर प्राण समा जा रे।

-लहर

प्रसाद के प्रेम वर्णन में शील, संयम और शिष्टाचार का बाँध कभी नहीं टूटता। उनका प्रेम दिव्य और उदात्त रूप में ढल कर आध्यात्मिकता की प्रतीति करता है। ''प्रेम-वेणु की लहरी में जीवन-गीत सुना जाओ'' की कामना करता हुआ कवि प्रेम को मानवीय रूप देकर भी स्वर्गिक बना देता है। लौकिक सौन्दर्य से अलौकिक लावण्य की ओर अग्रसर प्रसाद के

प्रेम में अनुभूति-प्रवणता है।'' वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे, जब सावन धन सघन बरसते थे, इन आँखों की छाया भर थे'' कहकर अपने विगत का स्मरण करने वाला स्मृति-प्रेमी अतीत की गलियों में प्रेमी को खोजता-ढूढँत है। विरह भावना के वर्णन में प्रसाद पर सूफियों के प्रेम प्रभाव को भी देखा जा सकता है-

छिल छिल कर छाले फोड़े,
मल मल कर मृदुल चरण से,
धुल धुलकर वह रह जाते,
आँसू करुणा के कण से।

-आँसू

कामायनी में प्रसाद काम और रति जैसी प्रेम की मूल प्रवृत्तियों को अत्यंत व्यापक धरातल प्रदान कर प्रणय भावना संबंधी अपनी नवीन दृष्टि का परिचय भी देते हैं। वास्तव में छायावाद युग ही प्रणय भावना के अत्यंत प्रगाढ़ और आवेशमय रूप का युग था। स्त्री सामाजिक स्वतंत्रता हासिल कर रही थीं। स्वच्छन्द वातावरण और इस इन्द्रजालिक परिवेश में मनु और श्रद्धा का प्रथम मिलन हृदय को पटल पर खोलता चला जाता है-

मधु बरसती विधु किरन हैं काँपती सुकुमार।
पवन में है पुलक मंथर, चल रहा मधुमार।
तुम समीप, अधीर इतने आज क्यों हैं प्राण
छल रहा है किस सुरभि से तृप्त होकर प्राण।

-कामायनी

स्पष्ट है कि प्रसाद का यह प्रेम दो हृदयों के पावन मिलन का प्रतीक है, जिसमें एक दूसरे का व्यक्तित्व अपनी पृथक सत्ता खो देता है। चेतना के इस उज्ज्वल वरदान के सहारे प्रेमी प्रणयी जीवन की उच्चतम भूमि तक पहुँच जाते हैं। संपूर्ण मानवता इसमें समा जाती है-

किन्तु न परिमित करो प्रेम
सौहार्द विश्वव्यापी कर दो

-प्रेम पथिक

अतः प्रसाद का प्रेम वर्णन मनोविज्ञान और दर्शन के मिश्रित आदर्श की स्थापना करता हुआ नारी को श्रद्धा की साकार प्रतिमा बना देता है। वह शक्तिमयी छाया शीतल बनकर अपने दिव्य रूप में चित्रित होती है। नारी और पुरुष को परस्पर पूरक मानने और स्थापित करने वाले प्रसाद ने प्रेम को घनीभूत करने वाले दृष्टिगत, शीलगत एवं मानसिक, तीनों ही प्रकार के सौंदर्य का हृदयस्पर्शी वर्णन अपने काव्य में किया है। ''आलिंगन में आते-जाते, मुस्क्या कर जो भाग गया'', ''निधरक तूने ठुकराया जब, मेरी टूटी प्याली को'', ''अरे कहीं देखा है तुमने, मुझे प्यार करने वालों को'', ''धीरे से वह उठता पुकार, मुझको न मिला रे कभी प्यार'' - जैसी अनुभूतियाँ कवि को स्थूल से सूक्ष्म की ओर तथा सहज से उदात्त की ओर उन्मुख करती हैं। प्रसाद की ये प्रेम भावनाएँ ''मेरी आँखों की पुतली में, तू बन कर प्राण जगा जा रे'' कहती हुई मधुर प्रेम भावना का एक नवीन उत्कर्ष प्रस्तुत करती हैं।

8.5.4 सौंदर्य चेतना

छायावादी काव्य की एक अन्यतम विशेषता है रूप सौंदर्य के दायरे से निकलकर मानस सौंदर्य या आन्तर सौंदर्य पर दृष्टि को निबद्ध करना। यह सौन्दर्य प्रकृति, पुरुष, नारी, जगत तथा जीवन सभी का है। यों सौंदर्य मनुष्य मात्र के आकर्षण का केंद्र है। अतः कवि का उसके प्रति आकर्षित होना तो सहज स्वाभाविक ही है। छायावादी कवियों को तो कल्पना और सौन्दर्य लोक का ही कवि कहा जाता है। तभी तो प्रसाद सौंदर्य लोक की ओर उन्मुख होकर कहते हैं-

ले चल मुझे भुलावा लेकर मेरे नाविक धीरे-धीरे
जिस निर्जन में सागर-लहरी

अम्बर के कानों में गहरी
निश्चल प्रेम कथा कहती हो तो तज कोलाहल की अवनी रे,

वास्तव में प्राचीन कवियों की शक्ति अन्तर्जगत के सौन्दर्य को अनावृत करने में उस सीमा तक नियोजित न हो सकी जितनी स्थूल शारीरिक सौन्दर्य के चित्रण पर। जबकि छायावादी कविता मानस-जगत के सौंदर्य के चित्रण में विशेष रूप से प्रवृत्त हुई। छायावाद के ये सौन्दर्य चित्र अनुभूति और कल्पना से प्रेरित हैं तथा अपूर्व और अनिर्वच-सौन्दर्य के प्रति विशेष रूप से सचेष्ट थी। उसमें ससीम और असीम दोनों सौंदर्यों के प्रति जिज्ञासा भी है और कौतूहल भी। यहाँ हम सरस्वती पुत्र महाकवि प्रसाद की सौन्दर्य चेतना पर विचार करते हुए उनके प्रकृति सौन्दर्य, नारी भावना का सौन्दर्य और गीति-सौन्दर्य पर विशेष रूप से दृष्टिपात करेंगे। शिल्प एवं संरचना के सौन्दर्य पर आगे विचार किया जा सकेगा। तो सर्वप्रथम हम प्रसाद के प्रकृति सौंदर्य का विवेचन करते हैं-

प्रकृति सौंदर्य

छायावादी काव्य में प्रकृति का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रकृति मानव की चिर सहचरी रही है। प्रकृति मनुष्य के जीवन की बाह्य आवश्यकताओं की निरन्तर पूर्ति के साथ-साथ मनुष्य की आन्तरिक अनुभूतियों को भी प्रभावित, संस्कारित और रूपायित करती रही है। यही कारण है कि मनुष्य का प्रकृति से अत्यंत जीवन्त, सम्वेदनशील तथा स्पन्दशील सम्बंध रहा है। वास्तव में छायावादी काव्य वह काव्य है जिसमें मानव और प्रकृति के मध्य साम्य का एक सूक्ष्म तन्तु कवि था। प्रकृति को जीवन्त तथा प्राणवान मानने वाला कवि जीवन के हर्ष विषाद को उसी में देखता और ढूंढता है। उसे अलौकिक गुण सम्पन्न अनन्त सौन्दर्यमयी नारी के रूप में देखता है। महाकवि प्रसाद ने भी प्रकृति के प्रति अपनी प्रगाढ़ अनुराग की व्यंजना करते हुए सूक्ष्म शब्दचित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रसाद कभी मन की अमूर्त लहरों को ''उठ उठ री लघु-लघु लोल लहर'' कहकर मूर्तिमान करते हैं तो कभी लहर की उठती-गिरती तड़पन में अपने प्रेमी हृदय की व्यथा को रूपायित करते हैं-

तब लहरों सा उठकर अधीर
तू मधुर व्यथा सा शून्य चीर
सूखे किसलय का भरा पीर।
गिरजा पतझड़ का सा समीर।

यही नहीं, मानव की गहराई में मन की गम्भीरता का प्रतिरूप भी प्रसाद देखते हैं। मन की धीर-गम्भीर तहों में कवि मानसरोवर की तरह प्रतिबिम्ब देखता है। इस शान्तभाव के मन में आन्दोलित अनुभूतियाँ मुखरित हो उठती हैं-

ओ री मानस की गहराई
ओ पारदर्शिका चिर चंचल
यह विश्व बना है परछाई।

गगन की नीलिमा में व्यक्ति के जीवन पर आच्छादित विषाद की नीलिमा का रूप देखते हुए प्रसाद दुख के प्रगाढ़ विस्तार में सुख की कौंध को, बादलों में कौंधती विद्युत सी मानते हैं।

प्रियतम के आगमन से नवीन स्फूर्ति आँखों में एक मादकता भर देती है पुष्प भी पंखुरिया खोलकर मकरन्द बिखेरने लगते हैं और हृदय के भाव बेकाबू होने लगते हैं-

फूलों ने पंखुरियाँ खोलीं
आँखें करने लगीं ठिठोली
हृदयों ने संभाली झोली
लुटने लगे विकल पागल मन।

इसी प्रकार-''अब जागो जीवन के प्रभात'' ''बीती विभावरी जाग री'' ''भुनती वसुधा तपते नग'', ''करूण गाथा गाती है, यह वायु बही जाती है'' ''वह लाज भरी कलियाँ अनन्त, परिमल घूँघट ढक रहा दन्त'' जैसी अनेकों पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं जहाँ प्रकृति सौंदर्य की अनुपम छटा बिखरी है।

प्रसाद प्रकृति चित्रण का वर्ण्य, अवर्ण्य, रहस्यात्मक, दार्शनिक, मानवीकरण तथा अलंकरण आदि कई रूपों में एक साथ वर्णित करते हैं। कभी प्रकृति आलंबन बन जाती है तो उषा, रात्रि, बसंत, सरिता, दीप, सागर और झरनों का रूप लेकर उभरती है। ''अब जागो जीवन के प्रभात'' में कवि अरुण वर्ण उषा को वसुधा पर ओस के क्षोभ भरे 'हिमकण-अश्रु' बटोरती नायिका बना देता है। कभी प्रसाद सरिता को अभिसारिका बना देते हैं तो कभी कोमल-कुसुमों की मधुर रात को अपलक जगती नायिका।

प्रसाद, प्रकृति को उद्दीपन रूप में भी चित्रित करते हैं। अपने भावानुसार कवि प्रकृति को हँसते रोते भी देखता है-

लहरों ने यह क्रीड़ा चंचल
सागर का उद्वेलित अंचल
है पोंछ रहा आँखें छल छल
किसने यह चोट लगाई है।

वास्तव में प्रसाद प्रकृति को रहस्यात्मक, उपमान, प्रतीक, मानवीकरण, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक कई रूपों में प्रस्तुत कर अपनी सूक्ष्म कलात्मकता का परिचय देते हैं। प्रसाद की ''कामायनी'' और ''लहर'' तो प्रकृति के मानवीकरण से समृद्ध कृतियाँ हैं ही। जल-प्लावन के कम होने पर धरती जब थोड़ी ऊपर आ जाती है तो प्रसाद मानवीकरण का रमणीय-उदाहरण बना देते हैं-

सिंधु सेज पर धरा बधू अब
तनिक संकुचित बैठी सी
प्रलयनिशा की हलचल स्मृति में,
मान किये सी ऐंठी सी।

उपमान रूप में प्रकृति का प्रयोग तो प्रसाद की विशेषता है ही। इसके लिए ''नील-नलिन से नेत्र चपल मद से भरे'', ''मकरंद मेघ माला सी वह स्मृति मदमाती आती'', ''ज्वालामुखी विस्फोट के भीषण'', ''प्रथम कंप सी मतवाली'', ''खिला हो ज्यों बिजली का फूल'' आदि कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। अतः कह सकते हैं कि प्रसाद का काव्य प्रकृतिमय ही है। विभिन्न रूपों में प्रकृति इनके काव्य को अनुरंजित करती हैं। प्रसाद के काव्य की शोभा वृद्धि का मुख्य उपकरण प्रकृति ही बनती है।

नारी भावना का सौंदर्य

छायावाद की सबसे बड़ी विशेषता है नारी के बाह्य अथवा नख-शिखा वर्णन से हट कर उसकी अन्तरात्मा की शक्ति पर दृष्टि को केंद्रित करना। प्रसाद तो नव्यतम नारी भावना की उदात्त कल्पना का आदर्श रखने में सबसे आगे रहे हैं। प्रिया का स्पर्श भी उन्हें अलौकिक माधुर्य प्रदान

करता है। पंत की सौन्दर्यानुभूति को प्रिया के सम्मुख त्रिभुवन की श्री को भी फीका महसूस करती है-

मूंद पलकों में प्रिया के ध्यान को,
थाप ले अब हृदय इस आह्लाद को,
त्रिभुवन की भी तो श्री भर सकती नहीं,
प्रेमसी के शून्य-पावन स्थान को

प्रसाद जी इसी प्रकार नारी के आन्तरिक सौन्दर्य पर ध्यान देते हुए उसके हृदय की सुकुमारता, दयाशीलता, क्षमाशीलता तथा ममता आदि गुणों पर स्वयं को न्योछावर कर देते हैं। नारी का बाह्य सौन्दर्य उन्हें आकर्षिक करता है पर उसकी आन्तरिक दीप्ति का प्रभाव आकर्षक को अलौकिक बना देता है। नारी ने इस युग के कवि को अपनी बहुविध शक्तियों से इतना अभिभूत कर दिया कि वह उसमें दिव्य और अतीन्द्रिय सौन्दर्य देखने लगा। निराला के ''तुलसीदास'' में भी ऐसी ही नारी है जहाँ उसका तेजस्वी प्रोज्ज्वल रूप उभरता है। प्रसाद नारी के उर में उषा का आवास देखते हैं तो उसके स्वभाव में चाँदनी की शीतलता। प्रसाद की कामायनी नारी के इसी आंतरिक सौन्दर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है-

मनु ने देखा कितना विचित्र। वह मातृ मूर्ति थी विश्वमित्र

x x x

तुम देवि आह कितनी उदार, यह मातृ मूर्ति है निर्विकार
हे सर्वमंगले। तुम महती सबका दुख अपने पर सहती,
कल्याणमयी वाणी कहती तुम क्षमा निलय में हो रहती।

यों प्रसाद ने नारी के बाह्य रूप के उदात्त-आकर्षक के अभिनव सौन्दर्य को भी चित्रित किया है। इस दिव्य और आह्लाद्कारी रूप पर कवि मुग्ध होकर कहता है-

लावण्य शैल राई-सा
जिस पर वारी बलिहारी
उस कमनीयता कला की
सुषमा थी प्यारी-प्यारी।

समस्त सौन्दर्य वर्णन में सौन्दर्य के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पक्षों का आलेख नहीं छायावादी काव्य की विशिष्टता है। कभी कवि ''मुख-चन्द्र चाँदनी जल से, मैं उठता था मुँह धो के'' जैसी अनुभूतियों से गुजरता है तो कभी महसूस करता है-

घन में सुंदर बिजली-सी,
बिजली में चपल चमक सी
आँखों में काली पुतली,
पुतली में श्याम झलक सी,

इसी प्रकार कवि ''नील परिधान बीच सुकुमार'', ''खिल रहा मृदुल अधखुला अंग'' में नायिका के अंगों की कान्ति, कोमलता, सिहरन, कम्पन और पुलकन आदि के दर्शन भी करता है। वास्तव में प्रसाद की नारी भक्तिकाल के भक्त या सन्त कवियों की नारी से पूर्णतः भिन्न सौन्दर्य और प्रेम की प्रतिमा है। जिसकी काँत छाया में थके पथिक के हृदय से ग्लानि और अपराध-बोध घुल जाते हैं। वह कल्याणी, मंगलकारिणी, पथ-प्रदर्शिका नारी श्रद्धेय ही नहीं, साक्षात 'श्रद्धा' का अवतार है-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।

स्नेह, दया, करुणा, क्षमा, त्याग, समर्पण, ममता आदि गुणों की अजस्र धारा बनी नारी, जो सुख को विस्तृत कर किसी को भी दुखी नहीं देखना चाहती, जो प्रेयसी, पत्नी और माता के रूप में

पुरुष की शुष्कता को मिटा कर अपनी आर्द्र कृपा से सिंचित करती है, जो अपने वक्षस्थल पर संसृति के ज्ञान-विज्ञान को एकत्रित कर अपने हाथों में कर्म-कलश लेकर वसुधा को जीवन रस के सार से उपकृत करती है, वह नारी पूज्या है। उसके इस स्वरूप को विस्मृत करना अपराध ही नहीं, पाप भी है। इसी तथ्य को प्रसाद बार-बार उजागर कर समस्त संसार को जागृत भी करते हैं।

काम मंगल से मण्डित श्रेय,
सर्ग, इच्छा का है परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल,
बनाते तो असफल भव धाम।

अतः स्पष्ट है कि प्रसाद ने नारी को पूर्णतः नवीन, पृथक एवं विशिष्ट भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है। यह भूमिका दिव्य है, ज्योतिर्मय है, महान प्रेरणा का अजस्र स्रोत है, शक्ति पुंज और कल्याणकारी है।

गीति सौंदर्य

गीति काव्य गीत शैली का नव्यतम विकास है और आधुनिक हिंदी काव्य के स्वच्छन्दतावादी गीतों के लिए गढ़े गए पाश्चात्य शब्द ''लिरिक'' का पर्याय ही प्रगति है। गीति वस्तुतः अभिव्यक्ति की वह अवस्था है जब मन में स्थित भाव स्वयं में समा नहीं पाता और विश्व के सम्मुख प्रकट होने को आकुल- व्याकुल हो उठता है। हृदय का सहज उच्छलन अभिव्यक्ति पा जाता है, जिसमें लय, गति, ध्वनि और गुंजन समा जाते हैं। उसमें वैयक्तिकता और आवेशमयता से मुक्त आत्मोद्‌गार अभिव्यक्त होते हैं। भावों का सहज प्रवाह रूपायित होता चला जाता है। प्रसाद के काव्य में भी इस छायावादी विशेषता के पर्याप्त दर्शन होते हैं। प्रसाद के झरना, लहर और आँसू तो गीति काव्य के अन्यतम उदाहरण ही हैं। छोटे और लम्बे गीतों से सुसज्जित प्रसाद का गीतिकाव्य वास्तव में सच्ची भाव सृष्टि का ही परिणाम है, जिसमें शब्द-अर्थ तथा उपमान और प्रतीकों का मधुर लय से बराबर योग रहता है। इन गीतों में सौन्दर्यीकर्षण, प्रणय-निवेदन, अतृप्ति, वेदनानुभूति तथा जीवन की मार्मिक व्यंजना सहज ही मिलती है-

वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे
जब सावनघन सघन बरसते
इन आँखों की छाया भर थे।
x x x
निज अलकों के अंधकार में
तुम कैसे छिप जाओगे
इतना सहज कुतूहल ठहरो
यह न कभी बन पाओगे।

प्रसाद जी के गीति-काव्य सृजन में भाव प्रधान, विचार-प्रधान, प्रकृति-प्रधान, रहस्य प्रधान तथा जीवन दर्शन प्रधान गीतों का अपार भंडार है जिसमें आत्मोद्‌गारों की सहज-अभिव्यक्ति हुई है। भारतीय इतिहास एवं राष्ट्रीय स्वर को मुखर करने वाले गीतों में तो प्रसाद निपुण हैं ही। जीवन की विशद्‌ता के इन उदात्त भावों के 'पेशोला की प्रतिध्वनि' तथा 'वरुणा का शांत कछार', में देखा जा सकता है।

''झरना'' का कवि यौवन के द्वार पर खड़ा जीवन के अनेक झंझावतों को देखता है। झरने की झर-झर बहती स्वच्छन्द गति उसे निर्झर गीतों में बहा ले जाती है। ''आँसू'' गीतिकाव्य

के वैभव से समृद्ध कृति है। कवि पूरी मार्मिकता से अपने अन्तरस की पीड़ा को गीतों के स्वर में पिरो देता है। कवि की व्यक्तिगत वेदना समस्त मानव जाति की वेदना बन जाती है-

इस व्यथित विश्व पतझड़ की
तुल जलती हो मृदु होली
हे अरुणे सदा सुहागिनि
मानवता सिर की रोला।

वास्तव में झरना के गीत जिस प्रणय भावना की ओर संकेत करते हैं, उसी का विकास आँसू है। लहर तक आते-आते प्रसाद के प्रगीतों की प्रौढ़ स्वरूप उभरता है। 'बीती विभावरी जाग री' में तो संगीत की लहरियाँ ही बिछती चलती हैं। इसी प्रकार ''मेरी आँखों की पुतली में, तू बन कर प्राण समा जा रे'', ''उस दिन जब जीवन के पथ में, छिन्न पात्र ले कम्पित कर में'', ''उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर'' तथा ''निधरक तूने ठुकराया तब, मेरी टूटी प्याली को'', जैसी कई कविताएँ इस संगीतमयी अनुभूति को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रकट करती हैं।

प्रसाद की गीत-सृष्टि की आरंभिक स्थिति किंचित शिथिल और मन्थर है। झरना के गीतों में अनुभूति की प्रवणता तो है किन्तु उसका प्रकाशन असाधारण नहीं बन पाता। जबकि 'लहर' और 'आँसू' में मनोरम कल्पना तथा प्रौढ़ अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। काव्य और दर्शन का अद्‌भुत समन्वय लहर के गीतों की प्रमुख विशेषता है। आख्यानक गीतों में भी सौन्दर्य का मादक वातावरण जीवित रखने का प्रयास कवि ने किया है। झरना में कवि किरण को सम्बोधित करता है, तो भी प्रेम और सौन्दर्य की सरस भावना गीति में ढल जाती है-

धरा पर झुकी प्रार्थना सदृश, मधुर मुरली सी फिर भी मौन,
किसी अज्ञात विश्व की विकल, वेदना दूती सी तुम कौन।

प्रसाद के गीतों में प्रणय के विभिन्न व्यापार रूपायित होते हैं तो स्वस्थ जीवन दर्शन की नियोजना भी होती है। अपने गीतों में वे करुणा और मधु का जीवन घोल भर कर समस्त मानवता को प्रदान करते हैं। ''भुनती वसुधा'', ''तपते नग, दुखिया है सारा अग जग'' जैसी अनुभूतियाँ कवि को मधु-रस वितरित करने की प्रेरणा देती है। संगीत, आत्माभिव्यक्ति अन्विति, भावावेग, रसाभिव्यक्ति तथा गागर में सागर भरने का गुण सभी कुछ प्रसाद के गीतों में मिलता है। कभी मधुप गुनगुना कर अपनी गीतात्मक कहानी सुना जाता है तो कभी ''आलिंगन में आते-आते मुस्करा कर भाग जाने वाले सुख की वेदना'' मुखर हो उठती है। प्रसाद के गीति सौन्दर्य को उनके नाट्य गीतों में भी देखा जा सकता है। वहां भी नाटककार प्रसाद पर उनका गीतिकार रूप प्रबल हो उठता है और वे ''भरा नैनों में मन में रूप , किसी छलिया का अमल अनूप'', ''तुम कनक किरण के अन्तराल में लुक छिपकर चलते हो क्यों?'', ''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती'' तथा ''अरुण यह मधुमय देश हमारा'' जैसे कितने ही मर्मस्पर्शी गीतों का सृजन करते चलते हैं। अतः कह सकते हैं कि प्रसाद की संगीत चेतना का वैशिष्टय असाधारण गीतों की सृष्टि करवाता है और भावावेग का मिश्रण उन्हें उत्कृष्ट रूप प्रदान करता है।

8.5.5 रहस्य एवं दर्शन

अन्वेषण और प्रणय निवेदन ही रहस्यवाद है तथा जीवन संबंधी तत्व चिन्तन ही सामान्यतः दर्शन कहलाता है। प्रसाद की संपूर्ण साधना की सिद्धि ''भूमा का सुख'' है। 'मैं' और 'मेरा' के संकुचित स्वार्थ के दायरे से दूर आनन्दमयी स्थिति तक पहुँचने का प्रयास ही शिवोपासक प्रसाद का प्रेम रहा है। जीवन के कठिन से कठिन पथ में भी हंसकर संघर्ष करना, मलिनता पर विजय पाना और जीवन को सुन्दरतम बनाना ही इस महाकवि का

जीवन संदेश कहा जा सकता है। मूलतः प्रसाद तत्वदर्शी थे और इसीलिए शैव, बौद्ध, शाक्त, वैष्णव तथा गांधी दर्शन के तत्वों को वे अपने काव्य में उजागर करते हैं। वेद, उपनिषद और पुराणों की दार्शनिक प्रणालियों का अवगाहन वे करते हैं तो पाश्चात्य दार्शनिक अवधारणाओं से भी अनभिज्ञ नहीं रहते। कामायनी में प्रसाद वैदिक एकेश्वरवाद की परम-शक्ति का सन्धान करते हुए नत-शिर उसी रहस्यमयी सत्ता का आदेश मानते जान पड़ते हैं-

सिर नीचा कर किसकी सत्ता
सब करते स्वीकार यहाँ
सदा मौन हो प्रवचन करते
जिसका वह अस्तित्व कहाँ?

वेदों में प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से ईश्वरीय सत्ता की प्रतीति करायी गयी है। इसी दिव्य अनुभूति की झलक प्रसाद काव्य में जगह-जगह मिलती है। ईश्वर की अवर्णनीय और रहस्यपूर्ण सत्ता समस्त भौतिक जगत में भी परिव्यप्त है, जिसका अनुभव तो होता है पर दर्शन नहीं-

''हे अनन्त रमणीय कौन तुम? यह मैं कैसे कह सकता।''

प्रसाद, छायावाद के ऐसे कवि हैं जिन पर शैव-दर्शन का अत्यंत गहरा और गम्भीर प्रभाव है। यों प्रसाद की ब्रहम, जीवन, आत्मा विषयक धारणाएं उपनिषदों के ब्रह्मवाद और अद्वैतवाद पर ही आधारित है पर उनकी इस अद्वैतवादी धारणा पर भी उनके सामरस्य सिद्धांत की अपेक्षा शैव दर्शन का प्रभाव अधिक है। इसमें भी काश्मीरी प्रत्यभिज्ञा दर्शन का प्रसाद जी पर विशेष प्रभाव है। इस दर्शन के अनुसार शिव (कल्याण) ही एक मात्र तत्व है और शेष सभी कुछ इसी से अभिव्यक्त है। यही शिव आत्म तत्व या चैतन्य स्वरूप है। यह शिव जड़-जगत सभी में विद्यमान है। परम शिव ही पूर्ण आनन्द स्वरूप है- ''लीला का स्पन्दित आह्लाद वह प्रभापुंज चिद्मय प्रसाद''। 'श्रद्धा' कामायनी में यही पराशक्ति बनकर उभरती है। मनु को शिवलोक ले जाने वाली शक्ति भी श्रद्धा ही है। कामायनी में समरसता सिद्धान्त का प्रतिपादन भी अद्वैत सिद्धान्त पर ही आधारित है। इच्छा, कर्म और ज्ञान का सामरस्य ही पूर्णता दिलवाता है-

ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सकें
यह विडम्बना है जीवन की।

प्रसाद का आनन्दवाद भी शैवागम से ही लिया गया है। कामायनी का साध्य भी यही है। श्रद्धा और इड़ा का समन्वय अपरिहार्य है। प्रसाद ने प्रेम-पथिक में प्रेम का पवित्र और आध्यात्मिक स्वरूप उपस्थित करते हुए पाश्चात्य दर्शन की विचारधारा को भी स्वीकारा है- ''किंतु पहुँचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं'' जैसी पंक्तियों में ऐसा देखा जा सकता है।

परम सत्ता में प्रसाद जी का पूरा विश्वास है। वह सर्वव्यापी है, नाना रूपों में विद्यमान है। अनन्त, सर्वशक्तिमान तथा असीम है। तभी वे कहते हैं- ''हे विराट। हे विश्वदेव! तुम, कुछ हो ऐसा होता भान''।

यही नहीं ''आँसू'', ''लहर'' और ''झरना'' आदि काव्य कृतियों में भी कवि की एक विशिष्ट विचार-दृष्टि का भान होता है। ''पागल रे वह मिलता है कब, उसको तो देते ही हैं सब'' कहकर ये व्यक्ति को देने की सीख देते हैं। आनन्द की स्थिति वही है जहाँ समस्त सुख-दुःख मिल कर जीवन को सौन्दर्य प्रदान करते हैं। इसी प्रकार ''अरी वरुणा की शांत

कछार, तपस्वी को विराग प्यार'' जैसी कविताओं में बौद्ध दर्शन प्रभावी हो जाता है। कभी वसुधा चरण चिह्नों सी बन कर यहीं पड़ी रह जावेगी जैसी तात्विक उक्तियों से से उपनिषदों के विचार प्रसार का दायित्व निभाते हैं।

यों प्रसाद के दर्शन और रहस्यवादी चेतना पर अत्यंत विस्तार से चर्चा की जा सकती है किन्तु यहाँ निष्कर्षतः इतना ही कहना पर्याप्त है कि कवि का ध्येय मन की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण करते हुए उन्हें अन्तर्मुखी बनाना और जीवन की समस्त जड़ता का अंत कर उसे आनन्दित करना है-

एक तुम यह विस्तृत भूखंड
प्रकृति वैभव से भरा अमंद।
कर्म का भोग भोग कर्म
यही जड़ चेतन आनन्द।

जीवन का मूल ही ''श्रद्धा''है। श्रद्धा के अभाव में ही विषमता जन्म लेती है। श्रद्धा से ही प्रेम और प्रेम से ही आनन्द मिलता है। कर्म के अभाव में जड़ता और निराशा छाती है। विरोधी शक्तियों का सामरस्य कल्याणकारी सिद्ध होता है। इससे भी आनन्द मिलता है। अतः समस्त जगत को अपनाकर अपने सुख को विस्तृत करने का यह दर्शन निश्चित ही महान है-

औरों को हंसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ
अपने सुख का विस्तृत कर लो, जग को सुखी बनाओ।

बोध प्रश्न 2

1. प्रसाद-साहित्य की मूल-चेतना को स्पष्ट करने वाली प्रमुख काव्य-पंक्तियाँ कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2. प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना पर उदाहरण सहित आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3. प्रसाद की प्रेम व्यंजना पर पाँच-छह पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

4. प्रसाद प्रकृति का मानवीकरण करने वाले अन्यतम-प्रतिभा के कवि हैं। उदाहरण सहित आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5. प्रसाद की नारी भावना का सौंदर्य उनकी उदात्त दृष्टि का सूचक है। सोदाहरण आठ पंक्तियों में स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6. प्रसाद की गीति योजना का सौन्दर्य अनुपम, अद्‌भुत एवं अप्रतिम है। आठ पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7. प्रसाद का दर्शन विषय को सम बनाकर कल्याण-पथ पर ले जाने वाला समरसता का दर्शन है। सोदाहरण आठ-दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।?

.....

.....

.....

.....

8. प्रसाद की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चेतना पर आठ पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 प्रसाद काव्यः शिल्प-विधान

महान कवियों का कला और शिल्प पक्ष भी उतना ही प्रौढ़ तथा सुगठित होता है जितना उसका काव्य। वास्तव में भावों और विचारों का प्रतिपादन कौशल ही कवि की अभिव्यंजना शक्ति का परिचय बनता है। भावों को वहन करने वाली भाषा तथा शैली कवि के भावावेग के अनुरूप ही ढलते चले जाते हैं। महाकवि प्रसाद ने भी काव्य शिल्प अथवा अभिव्यंजना कौशल के भाषा, शैली, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब, अलंकार तथा छंद आदि सभी विधाओं का अत्यंत कुशलता से निर्वाह किया है। यहाँ हम महाकवि प्रसाद के इसी कौशल का अध्ययन करते हुए अभिव्यंजना कौशल के उपकरणों पर अलग-अलग विचार करेंगे। सर्वप्रथम हम खड़ी बोली को उत्कर्ष शिखर पर पहुँचाने वाले इस महाकवि के भाषिक-कौशल पर दृष्टि डालते हैं। साहित्यिक एवं परिमार्जित भाषा तथा प्रस्तुति की कलात्मक दृष्टि ने जिस महाकवि की एक विशिष्ट पहचान बनाई और जिसके नाम पर युग का नाम रखा गया उसकी विषयानुकूल भाषा तथा भाषिक अंगों का सार्थक प्रयोग कैसे रमणीय एवं प्रभावोत्पादक बनता है, यही अब हम देखेंगे।

8.6.1 भाषा सौंदर्य

छायावाद के प्रवर्तक तथा हिंदी काव्य जगत के महाकवि जयशंकर प्रसाद की काव्य भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। आरंभ में यह सहज और सरल है लेकिन ज्यों-ज्यों प्रसाद का अध्ययन बढ़ता गया और भावों में परिपक्वता तथा प्रौढ़ता आती गई त्यों-त्यों उनकी भाषा गम्भीर और परिष्कृत भी होती गई। मनोभावों के द्वन्द्व चित्रित करने तथा गम्भीर विषयों का विवेचन करने के लिए कवि संस्कृत गर्भित भाषा का बखूबी प्रयोग करता है। संस्कृत तथा वैदिक- पौराणिक साहित्य का गहन अध्ययन कवि को तत्सम शब्दावली की ओर उन्मुख करता है। एक-एक शब्द नगीने की भाँति जुड़ा हुआ है और इसी से एक विशिष्ट तथा अद्वितीय भाषा का निर्माण किया गया है। भावों और विचारों का सहज-अनुगमन करने वाली यह भाषा गति और क्रम के अनुसार ही बदलती, बहती और ढलती है। सूत्र भरे वाक्यों और संगीतमय गीतों में एक अद्‌भुत उन्माद है और यही उसका व्यावहारिक पक्ष है।

प्रसाद ने अपने प्रारंभिक साहित्य सृजन में ब्रजभाषा का भी अत्यंत आधिकारिक प्रयोग किया किंतु बाद में समय की अपेक्षा को महसूस करते हुए प्रसाद ने संधि–समास युक्त खड़ी बोली को अपनाया। समूचे भारतीय समाज के स्वच्छन्दतावादी दौर से जुड़ी प्रसाद की इस भाषा पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के पद-चयन की झलक भी है तो परोक्षतः गुजराती और मराठी के स्वच्छन्दतावादी कवियों के साथ साधर्म्य भी। प्रसाद की भाषा में 'बीती विभावरी जाग री', अरे कहीं देखा है तुमने, मुझे प्यार करने वालों को' तथा 'उज्वल गाथा कैसी गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की' जैसी पंक्तियाँ ही 'माधुर्य गुण' का उदाहरण नहीं। 'आँसू' और 'कामायनी' के भी अनेकों उदाहरण देखे जा सकते है। चित्त को स्फूर्ति से उत्तेजित करने की विशेषता 'ओज गुण' की है। प्रसाद ने ओज गुण सम्पन्न भावों को भी कविता की डोर में कुशलता से पिरोया है।

ऊर्जस्वित रक्त और उमंग भरा मन था
जिन युवकों के मणिबन्धों में अबन्ध बल
इतना भरा था
जो उलटता शताध्वनियों को
गोले जिनके थे गेंद
अग्निमयी क्रीड़ा थी।

इसी प्रकार ''हिमाद्री तुंग श्रृंग से'' जैसी कविता भी देखी जा सकती है। ''मेरी आँखों की पुतली में तू बनकर प्राण समा जा रे।'' जैसी पंक्तियों में 'प्रसाद गुण' भी देखा जा सकता है।

वास्तव में प्रसाद की भाषा श्रम और साधना की भाषा है। ब्रजभाषा की ललित, मधुर और रस सिक्तता भरी प्रकृति की प्रतिस्पर्धा में प्रयुक्त इस भाषा को सुन्दर एवं स्वीकृत काव्य भाषा बनाने का श्रेय प्रसाद तथा अन्य छायावादी कवियों को ही जाता है। छायावाद से पूर्व खड़ी बोली अपना स्थान बनाने तो लगी थी किन्तु सौन्दर्य, सरसता, सुकुमारता, अर्थव्यंजकता तथा ध्वन्यात्मकता आदि गुणों से खड़ी बोली को समृद्ध करने का श्रेय छायावादी कवियों को, और विशेषतः प्रसाद को ही जाता है। आगे चलकर चारुता और कोमलता के गुणों से पंत जी ने इस भाषा को अपार समृद्धी दे कर सुसज्जित किया।

प्रसाद ने अपनी भाषा में तद्भव, देशज और ग्रामीण शब्दों का प्रयोग लगभग न के बराबर किया है। वे तो भाषा को कलात्मक और आभिजात्य आदि प्रवृत्तियों से समृद्ध करते रहे। प्रसाद ने काव्य-माधुर्य के लिए नए-नए शब्द भी गढ़े। उनमें चमक भी पैदा की। गढ़-घिस कर उन्हें भावों के अनूकुल ढाला। स्वप्निल, स्वर्णिम, निधरक, मुस्कया, तन्द्रिल, उर्मिल जैसे शब्द इसी का प्रमाण हैं। सन्धि-समास आदि नियमों की अवहेलना भी आवश्यकतानुसार की है। रोमाण्टिक कवियों के प्रभाव स्वरूप अंग्रेजी शब्दों के आधार पर नए हिंदी शब्द भी तैयार किए- भग्न-हृदय (ब्रोकन हार्ट), स्वर्गीय प्रकाश (हेविनली लाइट) तथा स्वर्णिम स्वप्न (गोल्डन ड्रीम) जैसे प्रयोग छायावाद में जगह-जगह देखे जा सकते हैं।

प्रसाद की भाषा में शब्द की तीनों शक्तियों का प्रयोग भी सराहनीय है। 'मधुर माधवी संध्या में जब रागारुण रवि होता अस्त' में अभिधा देखी जा सकती है। **''गोले जिसके थे गेंद, अग्निमयी क्रीड़ा थी'', ''अरी रण रंगिनी, सिक्खों के भौर्य भरे जीवन की संगिनी'', ''सो रहा पंचनद आज उसी शोक से'', ''नतमस्तक हुआ आज कलिंग'' तथा ''रानी तू वन्दिनी हो मेरी प्रार्थनाओं में''**- जैसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनमें 'लक्षणा शक्ति' मुखरित होती है। मोटे अक्षरों में लिखित शब्द यहाँ मुख्यार्थ में बाधा डाल किसी अन्य अर्थ का संकेत कर रहे हैं। इसी तरह अभिधा और लक्षणा से भी आगे चलकर जो अभिप्राय स्पष्ट हो वहाँ 'व्यंजना शक्ति' होती है। **'और आकाश को पकड़ने की आशा में, हाथ ऊँचा किये सिर दे दिया अतल'** में जैसी पंक्तियों में इसे देखा जा सकता है।

प्रसाद के गीतों में वाक् वैदग्ध्यपूर्ण उक्तियों के माध्यम से वक्रता के भी सुंदर उदाहरण प्रस्तुत हुए हैं। सीधी सरल उक्तियों में वक्रोक्ति एक विशेष अर्थ भर देती है। प्रसाद इस कला में अत्यंत निपुण हैं- ''तपस्वी के विराग की प्यार'' तथा ''दूध भरी दूध सी दुलार भरी माँ की गोद'' आदि पंक्तियों में प्रसाद जी की यह कलात्मकता भी देखी जा सकती है।

प्रसाद काव्य की भाषा का एक अन्य वैशिष्ट्य है 'वर्ण-संगीत' का प्रभावी प्रयोग। वर्ण-संगीत प्रसाद जी के प्रगीतों का प्राण तत्व है। ''खग कुल कुल कुल सा बोल रहा'', ''उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर'' जैसे कई प्रयोग इसका प्रमाण हैं। प्रसाद जी ने अपने काव्य में मुहावरे लोकोक्तियों का प्रयोग बहुत कम किया है किन्तु फिर भी यह काव्य इनके सौन्दर्य से वंचित नहीं। ''कौड़ी के मोल बेचना'', आकाश का पकड़ना'', ''जीवन का दाँव हारना'', ''डोरी से ऐंठना'' आदि मुहावरों का प्रयोग दृष्टव्य है-

कौड़ी के मोल बेचा जीवन का मणि कोष
और आकाश को पकड़ने की आशा में
हार बैठे जीवन का दाँव, जीतते जिसको मर कर वीर।
और निरूपाय मैं तो ऐंठ उठी डोरी सी।

प्रसाद जी की भाषा में कुछ सृजनात्मक अशुद्धियाँ या दोष देखे जा सकते हैं किन्तु यह स्पष्ट होना चाहिए कि ये दोष अनायास अथवा अनजाने में नहीं आते। सृजन और भावों का आवेग भाषा के स्वरूप को इस कदर बदल देता है कि लय और गति तथा संगीत और माधुर्य भाषिक नियमों पर हावी हो जाते हैं। बहुत सी जगह भावान्विति के कारण प्रसाद के वाक्य अधूरे ही जान पड़ते हैं और लिंग संबंधी दोष तो कई दिखाई देते हैं। 'आँख बंद

कर लिया सोते', 'काली आँखों की तारा का' तथा 'शिशर कला की शीत स्रोत' आदि ऐसे ही उदाहरण हैं। परन्तु कई स्थानों पर यह दोष है नहीं, जान पड़ता है। जैसे, प्रेयसी को प्रसाद पुरुषवाचक सम्बोधन से संबोधित करते हैं- ''कौन हो तुम वसन्त के दूत'' या ''फिर कह दोगे पहचानों तो मैं हूँ कौन बताओ तो'' आदि प्रयोगों में ऐसा देखा जा सकता है। पर स्पष्ट हो कि ये प्रयोग दोष नहीं। ये प्रयोग तो स्व-पर की भावना से ऊपर उठकर प्रेयसी को एक प्राणी मात्र समझकर किये गए प्रयोग हैं। इन्हें दोष नहीं कहा जा सकता। कहीं-कहीं अस्पष्टता-दोष अवश्य ही देखा जाता है, किन्तु वे सब इस प्राणवान काव्य भंडार के समक्ष नगण्य ही कहे जा सकते हैं। कुल मिलाकर प्रसाद की काव्य भाषा हिंदी साहित्य की गरिमा मंडित भाषा है। शक्तिमयी तथा प्राणवान भाषा का ऐसा दूसरा उदाहरण छायावाद से बाहर भी कहीं नहीं है।

8.6.2 शैलीगत नवीनता

प्रसाद की शैली प्रसादत्व से मंडित एक चिन्तक कवि की अपूर्व-शैली है। अभिज़ात-गरिमा से समृद्ध कवि की शैली में संगीत और लय का सामंजस्य है। लालित्य और वर्णों की भास्वरता तथा पदों के अनुसरण में मिलने वाली हल्की मिठास काव्य में एक मंजुल गूँज पैदा करते हैं। उनकी शैली में निराला की शैली का सा वैविध्य तो नहीं, पर प्रसाद के गम्भीर व्यक्तित्व की छाप इस शैली को एक विशिष्ट पहचान देती है। शवत और चिरंतन भावों-विचारों को वहन करने वाली भाषा तथा नव्यतम-रूप में ढाल कर प्रस्तुत करने वाली यह सौंदर्यमयी शैली एक 'अमर-संदेश' बनती है। प्रगीत के भावात्मक आवेशों को संगीत की पृष्ठभूमि पर थिरकाना तथा प्रेम पूर्ण-श्रृंगार के गीतों में उपालम्भ-शैली को भी क्रमशः ''उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर'' और ''मेरी आँखों की पुतली में तू बन कर प्राण समा जा रे'' में देखा जा सकता है। ''अरी वरुणा की शान्त कछार'' जैसी पंक्तियों में वर्णनात्मक-शैली है तो ''शेरसिंह का शस्त्र-समर्पण'', ''पेशोला की प्रतिध्वनि'' और ''प्रलय की छाया'' आदि में आख्यानक शैली के उदाहरण भी मौजूद हैं। ''मधुप गुनगुना कर कह जाता, कौन कहानी यह अपनी'' कविता में आत्मकथात्मक-शैली के दर्शन भी किए जा सकते हैं।

प्रसाद ने छोटे और लम्बे-दोनों प्रकार के गीत लिखे हैं। ''टेक'' की पंक्ति अपेक्षानुसार छोटी-बड़ी होकर गीत के सौन्दर्य में वृद्धि करती है। प्रसाद जी की ''चतुर्दशपदी'' का सुंदर प्रयोग भी शैली में चार-चाँद लगाता है। ''निज अलकों के अन्धकार में तुम कैसे छिप पाओगे'' इसका सुंदर उदाहरण है। अतः कह सकते हैं कि पदों में गम्भीर भाव भरकर संगीत तथा लय का विधान करना प्रसाद जी की शैली की मुख्य विशेषता है। देश-प्रेम की भावना से प्रभावित होकर वे वीर-रस भरी ओजमयी शैली अपनाकर मनमोहक शब्दचित्र बना देते हैं। उनका काव्य मुक्तक काव्य, प्रबन्ध काव्य, गीति काव्य, चम्पू काव्य और खंड-काव्य आदि कई रूपों में मिलता है। ''लहर'' और ''झरना'' गीतिकाव्य हैं तो ''कामायनी'' प्रबन्धकाव्य, ''करुणालय'' काव्य-रूपक है, ''उर्वशी'' चम्पू काव्य, तो ''आँसू'' खंड काव्य है। ''प्रेम-पथिक'' को भी लघु खंड काव्य कहा जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि श्रृंगार, वीर, करूण, शान्त तथा वात्सल्य आदि के सुन्दर उदाहरणों से समृद्ध इस रसवादी कवि का समग्र काव्य चिन्ता, लज्जा, निर्वेद तथा काम आदि अमूर्त भावनाओं को मूर्त करने वाला महान एवं अद्वितीय शैली का काव्य है।

8.6.3 प्रतीक विधान

काव्य के अभिप्रेषित अर्थ का घोषित करने के लिए जो माध्यम बनते हैं वे प्रतीक कहलाते हैं। ये प्रतीक प्रकृति, संस्कृति समाज, इतिहास तथा लोकानुभवों से किए जाते हैं। प्रसाद ने भी काव्य-सौन्दर्य की श्री वृद्धि के लिए बहुत से प्रतीकों का आश्रय लिया। संगीत कला के वीणा, झंकार, तार, प्रभाती, भैरवी मूर्च्छना, विहाग तथा वंशी जैसे प्रतीक यहाँ हैं तो चित्रकला के चित्र, रंग, रेखा चितेरा, तूलिका आदि प्रतीक भी उपलब्ध हैं। मूर्तिकला के

मूर्ति, मूर्तिकार तथा पाषाण आदि प्रतीक भी देखे जा सकते हैं। प्रकृति के फूल, काँटा, उषा, संध्या, चाँद, निशा, कामधेनु, कल्पवृक्ष, चातक, घन, दीपक आदि सैकड़ों प्रतीक भी मिलते हैं। अतः प्रसाद काव्य में सार्वभौमिक, देहागत, परम्परागत, वैभक्तिक, युगीन तथा भावात्मक आदि सभी प्रतीकों के उदाहरण देखे जा सकते हैं। ''आँसू'' में प्रसाद के तम, प्रकाश नवज्योति तथा मंजुल-मोती जैसे प्रतीक जीवन्त भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति करते हैं।

फिर तम प्रकाश झगड़े में
नव ज्योति विजयिनी होती
हँसता यह विश्व हमारा
बरसाता मंजुल मोती।

इसी प्रकार ''घन में सुन्दर बिजली सी, बिजली में चपल चमक सी'', ''सूखी-सी फुलवारी में, आये तुम इस क्यारी में'' प्रयोग भी द्रष्टव्य हैं जहाँ प्रतीक मुखरित हैं। ''झरना'' का एक उदाहरण देखिए जहाँ मलयानिल ''शीतलतम'' उजड़ी क्यारी (शुष्क-जीवन) तथा गुलाब (हृदय) आदि प्रतीक प्रयुक्त हैं-

मलयानिल की तरह कभी आ
गले लगोगे तुम मेरे।
फिर विकसेगी उजड़ी क्यारी,
क्या गुलाब की यह मेरे।

प्रसाद के तो 'आँसू' और 'कामायनी' प्रतीकों की भाषा में ही लिखे गए अन्यतम ग्रंथ है। ''इस करुणा कलित हृदय में, अब विकल **रागिनी** बजती'', ''पतझड़ था झाड़ खड़े थे, सूखे से **फुलवारी में'',** जैसी पंक्तियों में रागिनी (व्यथा के स्वर), पतझड़ (शुष्कता) और फुलवारी (हृदय) जैसी प्रतीक देखे जा सकते हैं। इसी तरह झंझा, बिजली, नीरद माला, मुरली, स्फुल्लिंग, माधवी, कुंज-छाया आदि प्रतीक भी दृष्टव्य हैं। कलियाँ सम्मोहन हैं, काँटे दुख हैं, आँधी हृदय की क्षुब्ध स्थिति है। प्रसाद की इस विपुल प्रतीक योजना ने मनोद शाओं का बहुत सुंदर ढंग से चित्रण किया है। ''लहर'' में भी प्राकृतिक प्रतीकों तथा प्रतीकात्मक अप्रस्तुतों का प्रचुर प्रयोग है। ''करुणा की नव अंगड़ाई सी'', ''तू भूल न री पंकज बन में'', ''उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर'' आदि कितने ही ऐसे प्रयोग हैं। कामायनी में तो प्रतीकों का प्रौढ़तम रूप ही देखा जा सकता है, जहाँ पात्र, सर्ग तथा कथा-क्रम भी प्रतीकात्मक हैं। मनु (मन या मनोमय कोश का जीव), श्रद्धा (हृदय), इड़ा (बुद्धि), मानव (नवमानव), देवगण (इन्द्रियाँ), त्रिलोक (भाव, कर्म और ज्ञानलोक) तथा कैलाश (आनन्दमय कोश) आदि इसी के उदाहरण हैं। अतः स्पष्ट है कि प्रसाद की प्रतीक योजना कवि के चिंतन एवं भाव व्यापार की कलात्मक पहचान बनती है।

8.6.4 बिम्ब विधान

काव्य सौन्दर्य के निर्धारक तत्वों में बिम्ब की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अंग्रेजी के ''इमेज'' शब्द का पर्याय है बिम्ब। इसका अर्थ है किसी वस्तु या पदार्थ का मनचित्र प्रस्तुत करना। इसे भावगर्मित शब्द चित्र भी कह सकते हैं। छायावाद में इसे चित्र विद्यान कहा गया है। अमूर्त को मूर्त करने की इस कला में प्रसाद बहुत निपुण हैं। भावों को स्थापित करने के लिए चित्रभाषा का कथात्मक प्रयोग करने वाले महाकवि प्रसाद ने बहुत से बिम्ब तैयार किए जिनमें उनकी स्वानुभूति, संस्कार, अध्ययन तथा जीवनानुभवों की स्पष्ट झलक मिलती है। इन बिम्बों में **शब्द** बिम्ब भी हैं। वर्ण बिम्ब भी हैं और व्यजंन प्रवण सामाजिक बिम्ब भी। अमूर्त को मूर्त बनाने की कथात्मक उपलब्धि प्रसाद के ''कामायनी'' जैसे महाकाव्य में सहज ही हो जाती है। ''लज्जा'' जैसे भाव का अद्‌भुत मूर्तिकरण देखिए:

कोमल किसलय के अंचल में
नन्हीं कलिका ज्यों छिपती सी,

गोधली के धूमिल पट में,
दीपक के स्वर में दिपती सी।

नीरव निशीध में लतिका सी,
तुम कौन आ रही हो बढ़ती?
कोमल बाँहें फैलाये सी,
आलिंगन का जादू पढ़ती[1]

यहीं नहीं प्रसाद के काव्य में ऐद्रिंय बिम्बों को भी प्रचुर मात्रा में उकेरा गया है। रमणीय **चाक्षुस**-बिम्ब की छटा ''किंजल्क-जाल हैं बिखरे, उड़ता पराग है रूख'' में भी बिखर जाती है तो काली आँखों में कितनी, यौवन के मद की लाली'' जैसी पंक्तियों में वर्ण-सौन्दर्य भी दर्शनीय बन जाता है। प्रसाद के व्यंजनाप्रवण सामासिक बिम्ब का एक उदाहरण देखिए-

संध्या की मिलन प्रतीक्षा
कह चलती कुछ मनमानी
ऊषा की रक्त निराशा
कर देती अन्त कहानी

प्रसाद बिम्बविधान के संदर्भ में छायावादी अन्य तीनों कवियों की तुलना में कम सावधान रहे हैं। किन्तु फिर भी यह बहुविध और पर्याप्त व्यापक गुण बन कर आया है। पंत और निराला के बिम्बों से तुलना तो नहीं हो सकती, किन्तु जहाँ-जहाँ भी काव्य सौन्दर्य की वृद्धि में इनकी आवश्यकता पड़ी है, प्रसाद ने इनका प्रयोग किया है। विराट दृश्यों को प्रस्तुत करने वाले एक उदात्त बिम्ब का दृश्य भी देखा जा सकता है। बिम्बों ने प्रसाद के कलात्मक सौख्य में अपार श्री वृद्धि की है-

अतलान्त महागम्भीर जलधि
तजकर अपनी मह नियत अवधि
लहरों के भीषण हासों में
आकर खारे उच्छवासों में,
युग-युग की मधुर कामना के
बन्धन को देता जहाँ ढील।

-लहर

8.6.5 अलंकार तथा छंद

छायावादी कवियों ने अलंकारों का प्रयोग काव्य में रमणीयता बनाये रखने के लिए किया है। यह प्रयोग सामास नहीं स्वतः प्रविष्ट हुआ जान पड़ता है। प्रसाद साहित्य में तो अलंकार अतिशयता के फलस्वरूप सहज एवं स्वाभाविक रूप में प्रस्फुटित हुए हैं। उनके काव्य में सादृश्य-मूल्क, वैषम्यमूलक तथा मानवीकरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग कई स्थानों पर देखा जा सकता है। सादृश्य मूलक अलंकारों में उपमा, रूपक, श्लेष तथा रूपकातिशयोक्ति जैसे कई अलंकारों का सुंदर प्रयोग दृष्टव्य है-

उपमाः i) वसुधा **चरण-चिह्न सी बनकर** यहीं पड़ी रह जावेगी।

ii) करुणा की **नव अंगराई सी,** मलयानिल की परछाई सी।

iii) उसी **तपस्वी से लम्बे थे** देवदारु दो चार खड़े

इसी प्रकार ''मस्तक में **स्मृति सी छाई'',** ''जल उठा स्नेह **दीपक सा''** तथा ''बड़वानल की **ज्वाला सी''** जैसे कई उदाहरण देखे जा सकते हैं।

रूपकः नील नयन से ढुलकाती हो
ताराओं की पाँत घनी रे।

बीती विभावरी जाग री
अम्बर पनघट में डुबो रही
ताराघट उषा नागरी।

पहले उदाहरण में जीवन को संध्या कहकर नील नयनों को आकाश और अश्रुओं को तारे कहा गया है। दूसरे उदाहरण में उषा को नायिका मानकर अम्बर रूपी पनघट में तारे रूपी घड़ों को डुबोने का सुंदर रूपक बनाया गया है। इसी प्रकार 'अलबेली-बाहुलता' और 'मानव-जीवन-वेदी' पर जैसे प्रयोग भी देखे जा सकते हैं।

रूपकातिशयोक्तिः बाँधा था विधु को किसने
इन काली जंजीरों से
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों जड़ा हुआ हीरों से?

सन्देहः नायिका की बाँह लता है या सौंदर्य रूपी सरोवर की कोई सुंदर लहर? सन्देह का सुंदर उदाहरण है-

अलबेली बाहुलता या तनु
छवि सर की नव लहरी।

व्यतिरेकः लहरें उठती थीं मानो चूमने को मुझको
और साँस लेता था समीर मुझे छूकर

इसी तरह ''सोने वाले जग कर देखें अपने सुख का सपना'' में **वक्रोक्ति** है तो ''उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर'' में **अनुप्रास, पुनरूक्ति एवं अन्योक्ति** की छटा को एक साथ देखा जा सकता है। ''किन्तु दुर्भाग्य पीछा करने में आगे था'' या ''कल्याणी शीतल ज्वाला'' जैसी पंक्तियों में **विरोधाभास है''**। ''जैसे उस नील निलय में'' और ''मालती कुंज में जैसे'' प्रयोग **उदाहरण अलंकार** के प्रमाण हैं। ''वे कुछ दिन कितने सुंदर थे'' में **स्मरण अलंकार** है। ''ओ री मानस की गहराई'' में मानस के 'हृदय' और 'सागर' अर्थ होने से **भलेष है।** ''उठ-उठ गिर-गिर फिर-फिर आती'' में **चित्रालंकार** है। इसी प्रकार प्रसाद ने मूर्त-उपमेयों के लिए अमूर्त-उपमानों की योजना भी की है तो अमूर्त उपमेय के लिए मूर्त उपमान की प्रस्तुति भी द्रष्टव्य है- ''जल उठा स्नेह दीपक सा नवनीत हृदय का मेरा''। प्रसाद ने **मानवीकारण** का तो अद्भुत प्रयोग किया है। अनेकों उदाहरण देखे जा सकते हैं। यहाँ एक उदाहरण देकर हम अलंकार प्रसंग की चर्चा समाप्त करेंगे-

पगली हा सम्भाल तो कैसे
टूट पड़ा तेरा अंचल
देख बिखरती है मणिराजी
अरी उठा बेसुध चंचल।

अतः स्पष्ट है कि प्रसाद के काव्य में अनिवार्य तथा अभिन्न अंग बने थे तथा अन्य कई अलंकार काव्य-सौन्दर्य में अपार वृद्धि करते हैं। इनसे भावोत्कर्ष, एवं रस-सृष्टि में सहायता ही मिलती है। ये प्रभावी बनते हैं चमत्कारी नहीं।

छंदः प्रसाद ने भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट छंदों का प्रयोग किया है। पंत और निराला की तरह वे छंद-विधान में स्वतंत्रता भले ही न लेते हों किन्तु उन्होंने अंग्रेजी के ''सानेट'' और बंगला के ''त्रिपदी'' तथा ''पयार'' नामक छन्दों का भी बाखूबी प्रयोग किया है। स्वच्छन्दता के इस युग में प्रसाद ''पेशोला की प्रतिध्वनि'' में मुक्त-छन्द का

प्रयोग भी करते हैं। पर अधिकाशंतः प्रसाद ने नवीन और प्राचीन का सामंजस्य कर संगीत की अभिवृद्धि तथा भाव-प्रवणता के लिए ही छन्दों का चयन किया। कई तरह के छन्दों का प्रयोग उनके प्रगीतों में विद्यमान हैं। ''लहर'' में 'बाला' 'पीयूष पर्व' तथा 'श्रृंगारहार' जैसे प्रयोग देखे जा सकते हैं। ''महाराणा का महत्व'' और ''प्रेम-पथिक'' में वे अनुकान्त प्रणाली को अपनाते हैं। ''आँसू'' में तो प्रसाद ने एक नया छन्द ही गढ़ डाला जिसका नाम भी ''आँसू'' छन्द ही पड़ गया। इसमें 14, 14 के विराम से 28 मात्राएँ हैं। इसका अनुकरण आगे चलकर मराठी साहित्य में ही हुआ। आँसू छन्द प्रसाद को अत्यंत प्रिय था। 'कामायनी' के अंतिम सर्ग ''आनन्द'' में भी वे इसी छंद का प्रयोग करते हैं-

। । । । ऽऽ । । । । ऽऽ । ।

समरस थे जड़ या चेतन = 14 मात्राएँ
सुंदर साकार बना था, = 14 मात्राएँ } =28
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था।

प्रसाद ने छंदों के मामले में बहुत जगह पर स्वच्छन्दता भरी दृष्टि का इस्तेमाल किया है। कहीं घनाक्षरी के आधार पर द्वन्द बनाया तो उसका अन्त बदल डाला। प्रसाद ने 'प्लवंगम' नामक छंद के आधार पर अन्तमुक्त प्रयोग भी किये हैं। ''कामायनी'' में तो प्रसाद ताटंक, पादाकुलक, रूपमाला, सार, रोला और स्वयं प्रसाद द्वारा निर्मित छंद-पादाकुलक-पद्धति, ताटंक और गेय आदि का सुंदर प्रयोग किया है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि प्रसाद का छन्द-विधान उनकी शास्त्रीय एवं मौलिक प्रतिभा का प्रबल प्रमाण है। उनके समग्र काव्य-संसार में इसे देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न 3

1. प्रसाद के भाषा-सौन्दर्य को काव्य-गुण तथा शब्द-शक्तियों ने अत्यन्त प्राणवान और सार्थक बनाया है। आठ पंक्तियों में उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. प्रसाद ने अपने काव्य के लिए कौन-कौन सी शैलियों को अपनाया? पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3. प्रसाद ने अपने काव्य को सार्थक प्रतीक विधान से सुसज्जित ही नहीं किया उसे शक्ति भी प्रदान की है। आठ-दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4. प्रसाद के बिम्ब-विधान पर पाँच-छह पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

5. प्रसाद का अलंकार-विधान उनके काव्य का अनिवार्य तथा अभिन्न अंग बन कर आया है। किन्हीं दो अलंकारों के उदाहरण देकर आठ पंक्तियों में स्पष्ट कीजिएः

.....

.....

.....

.....

6. प्रसाद की काव्य-भाषा में प्रयुक्त मुहावरों में से किन्हीं तीन के उदाहरण सहित आठ पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

8.7 मूल्यांकन (प्रसाद का प्रदेय)

इस समग्र विवेचन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रसाद ने अपने जीवनानुभव तथा अध्ययन को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। कल्पना और अनुभूति, इतिहास एवं संस्कृति तथा प्रेम एवं सौन्दर्य के योग से उन्होंने जिन आदर्शों का निर्माण किया उनमें जीवन-दर्शन को सन्निहित करने का सफल प्रयत्न किया है। ''कामायनी'' में वे मानव जाति के उत्थान और आनन्द-शिखर की यात्रा का महावर्णन करते हैं। ''आँसू'' में प्रसाद व्यक्तिगत प्रेम भावना को एक व्यापक धरातल प्रदान कर विश्व की करुणा को अपनी वेदना में समाहित करते हैं तो लहर में बौद्ध-दर्शन से प्रभावित युग चेतना को सफलतम अभिव्यक्ति देने वाले गीतों का सृजन करते हैं। जीवन को दृढ़ता से अपनी भावना में समन्वित कर अनेकों समस्याओं का समाधान खोजने वाले इस महाकवि ने मानवता के कल्याण का पथ-प्रशस्त किया है। बौद्धिकता, भौतिकवाद तथा विज्ञानवाद की अति से त्रस्त मानवता में श्रद्धा, आस्था, विश्वास और सहृदयता का पावन भाव जागृत करने वाले

इस सृजक ने भाव और कला दोनों ही दिशाओं में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के वरदान से उपकृत किया है। इस कालजयी महाकवि की देन भारतीय साहित्य के ही नहीं समग्र विश्व के लिए एक प्रेरणा बनती है। महाकवि प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक ही नहीं विश्व साहित्य सृजन के पुण्य पथ को प्रशस्त करने वाले अप्रतिम, अद्वितीय तथा अलौकिक प्रतिभा के विश्व कवि बन जाते हैं।

8.8 सारांश

- इस इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अतीत के झरोखों से वर्तमान की स्थितियों एवं समस्याओं को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक डोर में पिरोकर स्वच्छन्द रूप से प्रतिष्ठित करने वाले प्रसाद अलौकिक प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उदारता तथा धर्मनिष्ठता जैसे गुणों से सम्पन्न स्वस्थ मन मस्तिष्क और गम्भीर विचारों वाले इस महाकवि ने विषम परिस्थितियों और चुनौती भरे वातावरण में राह खोजने और समाधान ढूंढने का पाठ पढ़ाया।

- कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी तथा निबन्ध आदि गद्य विधाओं के माध्यम से प्रसाद ने सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय चेतना का प्रसार कर वैविध्यमयी पृष्ठभूमि में कल्याणकारी साहित्य का सृजन किया। युगीन समस्याओं को इनके परिप्रेक्ष्य में उजागर कर कवि ने कल्याण का पथ प्रशस्त किया है।

- प्रसाद की कविता में इतिहास, संस्कृति, पुराण, उपनिषद तथा वेदों आदि के कल्याणकारी निष्कर्ष को संजोया गया। उसमें राष्ट्रीय चेतना का उद्‌बोधन गान है, प्रेम की मर्म भरी व्यंजना तथा प्रकृति और नारी सौन्दर्य के प्रति कवि की नव्यतम दृष्टि एवं अनुपम प्रतिभा का प्रामाणिक लेखा-जोखा है। प्रसाद की गीति योजना परक सौंदर्य दृष्टि ने आत्मोद्‌गारों की संगीतमय अभिव्यक्ति से भी काव्य में मार्मिक प्रभाव पैदा किया है।

- कवि का काव्य-संसार ब्रह्म के प्रति प्रणय और उसकी खोज यात्रा की रहस्यात्मक अभिव्यक्ति से सुसज्जित होता है तो जीवन और जग संबंधी चिन्तन परम गम्भीर दर्शन में शैव, बौद्ध, शाक्त, वैष्णव एवं गांधी दर्शन आदि का सम्मिश्रण कर कल्याण एवं आनन्द का मार्ग भी दिखाता है।

- प्रसाद काव्य शिल्प के भाषा, शैली, प्रतीक, बिम्ब एवं अलंकार छंद आदि उपकरणों के कलात्मक प्रयोग से अपने अभिव्यंजना कौशल का ही परिचय नहीं देते, खड़ी बोली को उत्कर्ष शिखर पर पहुँचाकर अपनी मौलिक कलात्मक प्रतिभा से अभिव्यक्त पक्ष को सार्थक, समर्थ, रमणीय एवं प्रभावोत्पादक भी बना देते हैं।

8.19 शब्दावली

मानवतावादी दृष्टि : वह दृष्टि जिसमें मनुष्य के हित और कल्याण को महत्व दिया जाता है।

सार्वभौमिक दृष्टि : वह दृष्टि जो पृथ्वी के हर हिस्से को ध्यान में रख कर चले।

शैवमतावलम्बी : शैव दर्शन के मत पर आधारित रहने वाले।

अनुप्राणित : प्रेरित या अनुकरण करने वाले।

चतुर्दिक उन्नति : चारों दिशाओं में उन्नति पाना।

आत्मोत्सर्ग : आत्मा का उत्सर्ग अर्थात उन्नत होना।

आन्तर सौंदर्य : भीतर कर या आत्मा का सौंदर्य।

आह्लादकारी रूप : हार्दिक खुशी देने वाला रूप।

एकेश्वरवाद : एक ही ईश्वर को मानने वाला मत।

8.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

प्रसाद का काव्य, डॉ. प्रेमशंकर, भारती भंडार, सन् 1986।

छायावाद के आधार स्तम्भ, संपादकः राम जी पाण्डेय, लिपि प्रकाशन, सन् 1971।

प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, डॉ. प्रेमदत्त शर्मा, जयपुर पुस्तक सदन, सन 1968।

जयशंकर प्रसाद, नन्ददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, इलाहाबाद।

छायावादी काव्य, डॉ. कृष्णचंद्र वर्मा, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, सन् 1972।

छायावाद की परिक्रमा, श्याम किशोर मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् 1985।

जयशंकर प्रसाद, रमेशचन्द्रशाह; साहित्य अकादमी, दिल्ली, सन् 1984।

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. i) x
   ii) ✓
   v) x
   iv) ✓
   v) ✓

2. i) सन् 1889
   ii) श्री शम्भुरत्न
   iii) 12 वर्ष
   iv) सन् 1908

3. i) कामायनी, लहर, आँसू, झरना, कानन-कुसुम
   ii) सन् 1937 में, राजयक्षमा के कारण
   iii) सन् 1935 में, चित्राधार
   iv) स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजात- शत्रु तथा जनमेजय का नागयज्ञ
   v) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध
   v) कंकाल और तितली तथा आंधी और आकाशदीप

बोध प्रश्न 2

1. औरों को हँसते देखो मनु,
   हँसो और सुख पाओ,
   अपने सुख को विस्तृत कर लो,
   सबको सुखी बनाओ

   -कामायनी

   जननी जिसकी जन्मभूमि हो, बसुन्धरा ही काशी हो।
   विश्व स्वदेश, भ्रात मानव हों पिता परम अविनाशी हो।

   -कानन -कुसुम

2. देखिए, उपभाग 8.5.2
3. देखिए, उपभाग 8.5.3
4. देखिए, उपभाग 8.5.4
5. देखिए, उपभाग 8.5.4
6. देखिए, उपभाग 8.5.4
7. देखिए, उपभाग 8.5.5
8. देखिए, उपभाग 8.5.1

बोध प्रश्न 3

1. देखिए, उपभाग 8.6.1
2. देखिए, उपभाग 8.6.2
3. देखिए, उपभाग 8.6.3
4. देखिए, उपभाग 8.6.4
5. देखिए, उपभाग 8.6.5
6. देखिए, उपभाग 8.6.5
7. देखिए, उपभाग 8.6.1